न्यूजलेटर

जून 2024

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक
प्रो. नीलिमा गुप्ता
कुलपति
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,
सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श
डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय
कुलसचिव (प्र.)

संपादक
डॉ. विवेक जायसवाल
जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य
डॉ. हेमंत पाटीदार
डॉ. आशुतोष
डॉ. शालिनी चोइथरानी
डॉ. संजय शर्मा
माधव चंद्रा

नशा चाहें जितना हसीन हो पर जिंदगी के वैभव से बड़ा नहीं : डॉ. आशुतोष

युवक छात्रावास छात्रों के लिए विश्व तम्बाकू दिवस पर एक छात्र परिचर्चा का आयोजन किया गया. प्रो. रत्नेश दास, अध्यक्ष प्रतिपालक परिषद द्वारा छात्रावासीय गतिविधियों में अंत:वासियों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए छात्रावासों में गठित छात्र समितियों में से एक साहित्यिक-सांस्कृतिक समिति ने विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया.

कार्यक्रम के संयोजक डॉ. आशुतोष ने इस अवसर पर अंत:वासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि "नशा का अर्थ गुलामी है और गुलामी चाहें जितनी हसीन हो वह ज़िन्दगी से बड़ी नहीं हो सकती. छात्रावास एक ऐसी जगह है जहाँ आप अपनी जिंदगी में मनचाहें रंग भर सकते है. अब यह आप पर है कि अपनी ज़िन्दगी में अपनी पसंद के रंग भरते है या तम्बाकू का ज़हर. इसलिए हम सबको तम्बाकू से दूर रहने के साथ-साथ अपने आस-पास के लोगों को भी प्रेरित करते रहना है."

डॉ. गौतम प्रसाद ने अपने सम्बोधन में कहा कि "सभी को तम्बाकू और अन्य तम्बाकू जनित उत्पादों से दूर रहना चाहिए. आप सभी जिस उम्र में है उसमें खूब पढ़ना, खूब व्यायाम करना और खेलना बहुत जरुरी है. जीवन आपका है इसे आप जैसे चाहें सुन्दर बना सकते है."

छात्रवासी विश्वा गुप्ता ने तम्बाकू निषेध के लिए कानूनी प्रावधानों का तार्किक ढंग से उल्लेख करते हुए तम्बाकू सेवन के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक दुष्प्रभावो पर प्रभावशाली ढंग से अपनी बात रखी. दिव्यांग छात्र प्रवीण उद्दे ने 'रपट तक हो गई मैं काम ऐसा खास कर डाला, नशे की लत में ख़ुद को यार सत्यानाश कर डाला.' गीत के माध्यम से परिचर्चा को गति प्रदान किया. आयुष कुमार मिश्रा ने जीवन पर तम्बाकू और नशा के हानिकारक प्रभावों का उल्लेख करते हुए अपनी बात रखा. नीरज कुमार ने कविता के माध्यम से तम्बाकू उत्पादों का प्रचार कर रहे अभिनेताओं पर एक मार्मिक व्यंग प्रस्तुत

किया. प्रो. सुशील काशव के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन अंत:वासी छात्र ललित नागर ने किया. कार्यक्रम में डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. अरविन्द गौतम, डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी, रेशमपाल सिंह के साथ ही बड़ी संख्या में अंत:वासी छात्र उपस्थित रहे.

ग्रीष्मकाल में 08 समर स्किल कोर्सेस का आयोजन करेगा डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, 03 जून से रजिस्ट्रेशन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में दिनांक 29 मई 2024 को ग्रीष्मकाल में समर स्किल कोर्सेस के आयोजन को लेकर एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया था. उसके अनुक्रम में आज दिनांक 03

जून 2024 को पुनः समर स्किल कोर्सेस के संबंध में एक बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग ने ग्रीष्मकालीन समर स्किल कोर्सेस की रूपरेखा पर प्रकाश डाला और समिति को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय इस ग्रीष्मकाल में 08 समर स्किल कोर्सेस का आयोजन कर रहा है. इन समर स्किल कोर्सेस में आई.टी. स्किल के अंतर्गत एम.एस. आफिस के साथ-साथ वीडियो एडीटिंग एवं रिमोट सेंसिंग एण्ड जीएसआई के दो स्किल कोर्स बनाये गये हैं. इसी प्रकार आरोग्य एवं स्वास्थ्य के अंतर्गत स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और स्वस्थ जीवन शैली पर एक कोर्स डिजाइन किया गया है. यह कोर्स विद्यार्थियों के साथ-साथ समाज के सभी आयुवर्ग के नागरिकों के लिए स्वास्थ्य के प्रति सजगता एवं जागरूकता को दृष्टिगत रखते हुये बनाया गया है. इससे निश्चित ही आज के भागमभाग के समय में इसकी आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता है.

प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने जानकारी देते हुये बताया कि परफार्मिंग आर्ट्स विभाग के माध्यम से विद्यार्थियों की अभिरूचि को ध्यान में रखते हुये तीन कोर्स डिजाइन किये गये हैं. इनमें लोक वाद्य एवं गायन, हल्का संगीत एवं शास्त्रीय वाद्ययंत्र बांसुरी एवं सितार हैं. इन चार साप्ताहिक कोर्स के अंतर्गत विद्यार्थी अपनी अभिरूचि के अनुरूप उक्त पाठ्यक्रमों में पंजीयन करा कर अपने स्किल को इम्प्रूव कर सकते हैं.

इसी प्रकार जैविक खेती का चलन बढ़ रहा है. इसकी तकनीक को सिखाने के उद्देश्य से यह कोर्स डिजाइन किया गया है. इसमें कम्पोस्ट का उपयोग, उसका तरीका एवं कैसे कम्पोस्ट का सम्मिश्रण तैयार किया जाये. यह एक उपयोगी एवं जैविक खेती के प्रति रूचि पैदा करने वाला पाठ्यक्रम है. सीमित अवधि के भीतर इसको इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि ज्यादा

से ज्यादा जानकारी प्रदान की जा सके. तकनीक के युग में डिजीटल स्किल के बारे में प्रायः सभी जानते हैं. इसमें इम्प्रूवमेंट के लिए यह एक उपयोगी पाठ्यक्रम है. इस ग्रीष्मकाल में विद्यार्थी इस कोर्स के माध्यम से अपने फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी के हुनर को और बेहतर ढंग से सीख कर इसका लाभ उठा सकते हैं. यह कोर्स इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर बनाया गया है.
कुलपति प्रो. गुप्ता ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुये समिति के अध्यक्ष एवं सदस्यों को बधाई देते हुये इन कोर्सेस के सफल संचालन के लिए अपनी शुभकामनायें दीं. माननीया कुलपति महोदया ने कहा कि निश्चित ही इन ग्रीष्मकालीन, सीमित अवधि के बहुउपयोगी कोर्सेस से विद्यार्थी न सिर्फ अपने स्किल को बढ़ा सकते हैं बल्कि इन स्किल के माध्यम से स्वावलंबी भी बनेंगे. अपने पठन-पाठन के साथ इस प्रकार की गतिविधियों के लिए एक प्लेटफार्म आवश्यक था. विश्वविद्यालय ने इस दिशा में एक प्रयास शुरू किया है. यह प्रयास सफल हो, इसके लिए हमें अपने स्तर पर कोशिश करनी होगी, जिससे हमारे विद्यार्थी अपनी अभिरूचि के विषयों में कुछ नवीन सीख सकें. विश्वविद्यालय इन समर कोर्सेस के लिए विद्यार्थियों एवं आमजन के हित में 8 आनलाईन/ऑफलाईन कार्यक्रमों का आयोजन करेगा. इन कार्यक्रमों में विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों, स्कूलों में अध्ययनरत् विद्यार्थी भी भाग ले सकते हैं. इस हेतु विश्वविद्यालय अपनी बेवसाईट पर पंजीयन हेतु लिंक आज दिनांक 03 जून 2024 से उपलब्ध करा दी गई है जहां विद्यार्थी अपने मन चाहे कोर्सेस में निर्धारित शुल्क का भुगतान कर पंजीयन करा सकता है. इसके लिए इच्छुक आमजन भी पंजीयन करा कर इन कोर्सेस में सहभागिता कर सकते हैं.

नवाचारपरक कोर्सेस की रूपरेखा पर एक पोस्टर तैयार किया है, जिसका विमोचन विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा किया गया. इस पोस्टर में ग्रीष्मकालीन समर कोर्सेस की संपूर्ण जानकारी दी गई है. नवाचार एवं कौशल विकास की इन गतिविधियों के लिए विश्वविद्यालय में दिनांक 03 जून 2024 से 13 जून 2024 तक पंजीयन हेतु लिंक उपलब्ध है. ग्रीष्मकालीन समर स्किल कोर्सेस की आनलाईन/ऑफलाईन कक्षायें दिनांक 15 जून 2024 से आरंभ की जायेंगी, जिसकी कक्षाओं से संबंधित जानकारी एवं समय सारणी शीघ्र ही विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध कराई जा रही है.

एनसीसी कैडेट्स ने विश्व पर्यावरण दिवस पर किया वृक्षारोपण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सीनियर डिवीज़न एनसीसी कैडेट्स ने विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर एनसीसी कार्यालय में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया. यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के संरक्षण

तथा 3 एम पी सिग्नल कम्पनी एनसीसी के कमान अधिकारी कर्नल अरुण कुमार बेन्सला के निर्देशन में आयोजित की गई. इस कार्यक्रम के संयोजक कंपनी कमांडर लेफ्ट०धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ ने पर्यावरण को स्वच्छ रखने तथा मानव जाति के उत्थान के लिए यूएनईपी द्वारा निर्दिष्ट वर्ष 2024 के थीम भूमि पुनर्स्थापना, मरुस्थलीकरण और अकाल अनुकुलानशीलता विषय पर संक्षिप्त व्याख्यान दिया एवं कैडेट्स को पर्यावरण के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का बोध कराया. इस अवसर पर अंडर ऑफिसर प्रभाष ओझा, कैडेट रूपल, शिवांग, हर्षित एवं अन्य कैडेट्स उपस्थित रहे.

कम्यूनिटी कॉलेज के द्वारा संचालित स्किल कोर्सेस में 10 जून से प्रवेश प्रारंभ

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कम्यूनिटी कॉलेज के नोडल अधिकारी एवं स्किल कोर्स कोआर्डिनेट की एक बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी ने की.

प्रो. सुशील कुमार काशव, नोडल अधिकारी, कम्यूनिटी कॉलेज ने विगत वर्षों में कम्यूनिटी कॉलेज से विभिन्न कौशल विकास संबंधित कोर्स में पंजीकृत विद्यार्थियों की जानकारी देते हुये कहा कि विश्वविद्यालय कम्यूनिटी कॉलेज के माध्यम से समाज के सभी आयु वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए इन स्किल कोर्सेस के माध्यम से प्रशिक्षित कर रहा है. इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेकर विद्यार्थी अपनी अभिरूचि के अनुरूप पाठ्यक्रम का चयन कर इनमें प्रवेश लेकर अपनी न सिर्फ शैक्षणिक योग्यता बढ़ा रहा है बल्कि इन सर्टिफिकेट, डिप्लोमा कोर्सेस को करके एक नये स्किल में पारंगत हो रहा है. कम्यूनिटी कॉलेज नवीन सत्र से 03 नये स्किल कोर्सेस भी प्रारंभ कर रहा है. इनमें योगा एण्ड वेलनेस, इंटीरियर डिजाइनिंग तथा क्ले एण्ड पिरामिड आर्ट शामिल हैं.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बैठक को संबोधित करते हुये कहा कि कम्यूनिटी कॉलेज द्वारा संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेशित एवं प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को सुगमतापूर्वक अपने सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स पूर्ण करने के लिए सतत् मार्गदर्शन प्रदान किया जाये. समन्वयक अपने-अपने पाठ्यक्रमों को अपडेट करते रहें. साथ ही समन्वयक कम्यूनिटी कॉलेज के अंतर्गत संचालित इन पाठ्यक्रमों के संबंध में अपने-अपने विभागों के साथ-साथ अन्य माध्यमों जैसे सोशल मीडिया, वेबसाईट, पत्र पत्रिकाओं में सूचना, विभागों में सूचना पटल पर प्रवेश संबंधी एवं कोर्स की संपूर्ण जानकारी देते हुये इसका प्रचार प्रसार करें, जिससे विश्वविद्यालय के साथ-साथ अन्य विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों एवं स्कूली शिक्षा पूर्ण कर चुके ऐसे विद्यार्थी एवं आमजन जो अपनी अभिरूचि के अनुरूप स्किल कोर्सेस करना चाहते हैं, उन तक जानकारी पहुंच सके. समन्वयकों का यह दायित्व होता है कि वह अपने स्किल कोर्स के संबंध में अपने विद्यार्थियों को पूर्ण जानकारी से

अवगत करायें. इन पाठ्यक्रमों की जानकारी सभी माध्यमों से प्रचारित प्रसारित की जाये, जिससे सागर एवं सागर के आसपास के विद्यार्थी इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेकर अपनी दक्षता बढ़ा सकें.

कम्यूनिटी कॉलेज महत्वपूर्ण विषयों पर सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स संचालित कर रहा है. इनमें फैशन टेक्नालॉजी, डिजाइनिंग एवं मैनेजमेंट महिलाओं के लिए उपयोगी स्किल कोर्स है. इस पाठ्यक्रम में सभी आयु वर्ग की महिलायें प्रवेश लेकर अपनी सिलाई कढ़ाई के हुनर को परिष्कृत कर फैशन डिजाइनिंग में भी पारंगत हो सकती हैं. इसी प्रकार पर्यटन एवं ऐतिहासिक धरोहरों से संबंधित जानकारी के साथ डिप्लोमा इन टूरिज्म, हिस्टोरिकल टूरिज्म एण्ड टूरिज्म गाईड का कोर्स कर प्रदेश एवं देश के विभिन्न ऐतिहासिक नगरों में विद्यार्थी स्व-रोजगार प्रारंभ कर सकता है. सागर नगर के ऐसे छात्र जो ग्रामीण परिवेश से आते हैं एवं जिनके अभिभावक/प्रतिपालक खेती किसानी का कार्य करते हैं, उनके लिए जैविक खेती के गुर सीखने के साथ-साथ जैव कीटनाशक एवं प्रबंधन का स्किल कोर्स है, आगर्निक फार्मिंग का कोर्स है, कम्पोस्टिंग टेक्नीक का कोर्स है, मशरूम उत्पादन का कोर्स है, जिनमें प्रवेश लेकर विद्यार्थी अपने स्किल के साथ-साथ अपने अभिभावकों/प्रतिपालकों के व्यवसाय में सहयोग कर अपने परिवार की आय को दुगना कर सकते हैं.

आज के दौर में वेस्ट मैनेजमेंट एक महत्वपूर्ण विषय है. देश में वेस्ट मैनेजमेंट के लिए काफी प्रयास किये जा रहे हैं. अवशिष्टों का सही ढंग से निष्पादन आवश्यक है. आधुनिक जीवन शैली एवं शहरीकरण के कारण वेस्ट मैनेजमेंट कोर्स का महत्व बढ़ गया है. विद्यार्थी इसके माध्यम से अपने लिए स्वरोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते हैं. विश्वविद्यालय का कम्यूनिटी कॉलेज अपने यहां पेपर एवं प्लास्टिक वेस्ट रिसाइकिल एण्ड मैनेजमेंट का डिप्लोमा कोर्स संचालित कर रहा है. निश्चित ही यह कोर्स ऐसे विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, जो इस क्षेत्र में कार्य करना चाहते हैं. समाज में सेवा कार्यों में संलग्न विद्यार्थियों के लिए भी सोशिल रिस्पोंस्विलटी एवं सोशल ऑडिट का कोर्स है.

कम्यूनिटी कॉलेज द्वारा किये जा रहे प्रयासों एवं सामाजिक जागरूकता के साथ-साथ स्किल पाठ्यक्रमों के सफल संचालन के लिए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. गुप्ता ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुये समिति के नोडल अधिकारी प्रो. काशव एवं उनकी टीम से नवीन सत्र के लिए और बेहतर कार्य करने के लिए निर्देशित किया एवं कहा कि जहां आवश्यक है विश्वविद्यालय हर स्तर पर आपका सहयोग करेगा. माननीया कुलपति महोदया ने कहा कि निश्चित ही इन बहुउपयोगी कोर्सेस से विद्यार्थी न सिर्फ अपने स्किल को बढ़ा सकते हैं बल्कि इन स्किल के माध्यम से स्वावलंबी भी बनेंगे.

विश्वविद्यालय कम्यूनिटी कॉलेज इन स्किल कोर्सेस के लिए शीघ्र ही पंजीयन प्रारंभ कर रहा है. इस हेतु विश्वविद्यालय अपनी बेवसाईट पर पंजीयन हेतु लिंक दिनांक 10 जून 2024 से उपलब्ध कराई जा रही है जहां विद्यार्थी अपने मन चाहे कोर्सेस में निर्धारित शुल्क का भुगतान कर पंजीयन करा सकता है. इसके लिए सभी आयुवर्ग के इच्छुक आमजन भी पंजीयन करा कर इन कोर्सेस में सहभागिता कर सकते हैं.

बैठक में प्रो रत्नेश दास, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. वंदना राजौरिया, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. सोनिया कौशिक, डॉ. शालिनी, डॉ. किरण आर्य एवं डॉ. जी.के. तिवारी उपस्थित रहे.

शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में किया वृक्षारोपण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में विभागीय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. उक्त आयोजन में शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन,

सभी शिक्षकगण, गैर-शैक्षणिक एवं विभाग के छात्र-छात्राओं ने पौधा रोपण कर प्रतिभाग किया. इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष ने विद्यार्थियों को पर्यावरण को स्वच्छ रखने हेतु कम से कम एक पौधे को गोद लेने का संकल्प कराया.

पुरातत्त्व संग्रहालय में नृवराह की गुप्तकालीन प्रतिमा अद्वितीय है : अपर कलेक्टर रूपेश उपाध्याय

अपर कलेक्टर द्वारा विश्वविद्यालय के पुरातत्त्व संग्रहालय का भ्रमण

प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के पुरातत्त्व संग्रहालय के भ्रमण के दौरान अपर कलेक्टर श्री रूपेश उपाध्याय ने पुरातत्त्व संग्रहालय में प्रदर्शित एरण से प्राप्त गुप्तकालीन नृवराह की

विशाल प्रतिमा को देखते हुए कहा कि ‘‘यह प्रतिमा एक अद्वितीय प्रतिमा है.’’

विभाग के विभागाध्यक्ष, प्रो. नागेश दुबे एवं विभागीय शिक्षकों के द्वारा उन्हें पुरातत्त्व संग्रहालय का भ्रमण कराया गया. संग्रहालय की वैष्णव दीर्धा, शैव दीर्धा, शाक्त दीर्धा, जैन दीर्धा, गौण-देव दीर्धा एवं उत्खननों एवं सर्वेक्षणों से प्राप्त पुरासामग्रियों की जानकारी प्रदान की गयी. श्री उपाध्याय ने पुरातत्त्व संग्रहालय में संग्रहीत प्रतिमाओं एवं पुरासामग्रियों को सागर एवं बुन्देलखण्ड की संस्कृति के लिये महत्वपूर्ण एवं अद्वितीय संग्रह बतलाया.

अपर कलेक्टर श्री रूपेश उपाध्याय ने पुरातत्त्व संग्रहालय को एक पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने का आश्वासन दिया.

पुरातत्त्व संग्रहालय के भ्रमण के दौरान श्री उपाध्याय के साथ विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष, प्रो. बी.के. श्रीवास्तव, ई.एम.आर.सी. निर्देशक डॉ. पंकज तिवारी, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. संजीव सराफ, डॉ. के. के. राव, इंक

मीडिया के निर्देशक डॉ. आशीष द्विवेदी एवं विभाग के डॉ. सुरेन्द्र कुमार यादव, डॉ. शिवकुमार पारोचे, डॉ. मशकूर अहमद कादरी एवं शोधार्थीगण यामिनी योगी, कीरत अहिरवार, आनन्द जायसवाल, भरत यादव, संजय आठिया, सोहनलाल मोदनवाल एवं कर्मचारीगण आदिल खान, हाशिम कुरेशी, मोहन राय एवं राजेन्द्र रजक उपस्थित रहे.

पर्यावरण अध्ययन का क्षेत्र प्रासंगिक एवं अपार संभावनाओं से भरा है - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्व पर्यावरण दिवस पर विशेष व्याख्यान का आयोजन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून 2024 को धूमधाम से मनाया गया. इस अवसर पर कई कार्यक्रम आयोजित किए गए. इन कार्यक्रमों में वृत्तचित्र प्रदर्शन, पोस्टर प्रतियोगिता और एक विशेष व्याख्यान सम्मिलित थे. कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आईआईटी हैदराबाद के जलवायु परिवर्तन विभागाध्यक्ष, डॉ. आसिफ क़ुरैशी थे. उन्होंने ‘जलवायु परिवर्तन और इसके स्वास्थ्य पर प्रभाव’ विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया. डॉ. क़ुरैशी ने

जलवायु परिवर्तन के विभिन्न प्रभावों जैसे हीट वेव्स (गर्मी की लहरें), समुद्र स्तर में वृद्धि, वायु प्रदूषण, कणीय पदार्थ और मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव के बारे में जानकारी दी. उन्होंने अपने व्याख्यान में इस बात पर जोर दिया कि जलवायु परिवर्तन मानव स्वास्थ्य को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों रूपों में प्रभावित करता है. अत्यधिक गर्म लहरें, समुद्र का बढ़ता स्तर, वर्षा में परिवर्तन जिसके परिणामस्वरूप बाढ़ और सूखा पड़ता है, जिससे कि विभिन्न तरीके की बीमारियां और यहां तक कि मौत भी हो सकती हैं. अपने व्याख्यान में उन्होंने उदाहरण के साथ पूरे परिदृश्य की व्याख्या की और कहा कि वायु प्रदूषण के स्तर के बिगड़ने से श्वसन और हृदय संबंधी स्थितियों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है. तापमान और वर्षा में परिवर्तन से कीटों और अन्य प्रजातियों के अस्तित्व, वितरण और व्यवहार में बदलाव आ सकता है, जिससे संक्रामक रोगों में वृद्धि होती है. अंत में उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन के नुकसान को कम करने के लिए एक समग्र और प्रभावी सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था की आवश्यकता है.

इस कार्यक्रम का संयोजन डॉ. मुकेश कुमार कंवर, सहायक प्राध्यापक, पर्यावरण विज्ञान विभाग ने किया. जबकि कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अमित कुमार, डॉ. श्वेता शर्मा और डॉ. सत्यम वर्मा, सहायक प्रोफेसर थे. इस अवसर पर स्वागत वक्तव्य प्रो. एम एल. खान ने दिया एवं डॉ. सत्यम वर्मा द्वारा औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव रखा गया. प्रो. एम. एल. खान ने अपने वक्तव्य में यह कहा कि पर्यावरण का संकट वास्तविक है और इसे नकली औजारों से एवं नकली त्योहारों से लड़ा नहीं जा सकेगा. इसके लिए वास्तविक तैयारी करनी पड़ेगी. इस अवसर पर पर्यावरण विज्ञान एवं वनस्पति विज्ञान विभाग के समस्त शिक्षक, शोधार्थी, एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे.

गौरतलब है कि आज के परिदृश्य में पृथ्वी विभिन्न पर्यावरणीय खतरों का सामना कर रही है, जो स्थानीय मुद्दों जैसे संसाधनों की कमी, अपशिष्ट प्रबंधन से लेकर वैश्विक जलवायु परिवर्तन जैसी वैश्विक चुनौतियों तक फैली है. इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए जनता के बीच विभिन्न पर्यावरणीय समस्याओं के कारणों और परिणामों के बारे में जागरूकता पैदा करने और उनसे निपटने के लिए उपाय विकसित करने की तत्काल आवश्यकता है. पर्यावरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को ध्यान में रखते हुए, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में माननीया कुलपति, प्रो. नीलिमा गुप्ता के मार्गदर्शन मे पर्यावरण विज्ञान में परास्नातक पाठ्यक्रम सत्र (2023-2025) से शुरू किया गया था. यह पाठ्यक्रम नई शिक्षा नीति 2020 के अनुसार तैयार किया गया है. इस पाठ्यक्रम के विभागाध्यक्ष प्रो. एम. एल. खान ने बताया कि स्नातक स्तर की पढ़ाई के बाद पर्यावरण विज्ञान, जूलॉजी, बॉटनी, केमिस्ट्री, फिजिक्स, जियोलॉजी, माइक्रोबायोलॉजी, बायोटेक्नोलॉजी और अन्य प्रासंगिक विशेषज्ञता में स्नातक की डिग्री रखने वाला कोई भी छात्र इस कोर्स के लिए आवेदन करने के लिए पात्र है. इस कोर्स में प्रवेश नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (सीयूईटी) द्वारा काउंसलिंग प्रक्रिया के माध्यम से दिया जा रहा है.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में कैरियर में अपार संभावनाएं हैं. पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद, पर्यावरण विज्ञान विभाग के छात्रों के पास विश्वविद्यालयों और सरकारी अनुसंधान संगठनों जैसे पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद, भारतीय कृषि शोध संस्था में शोध और अनुसंधान से जुड़े प्रमुख कैरियर विकल्प उपलब्ध हैं. इसके अलावा, वे निजी उद्योगों, परामर्श, ग्रीन मार्केटिंग, ग्रीन मीडिया, गैर सरकारी संगठनों, अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियों और सरकारी पीएसयू जैसे एनटीपीसी, आईयूसीएल, सीआईएल, एचएएल आदि में भी समाहित हो सकते हैं.

शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों में आईटी की महत्त्वपूर्ण भूमिका - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय में फायरवॉल, सर्वर और कोर स्विचेज का उद्घाटन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में अत्याधुनिक फायरवॉल, सर्वर, वाई-फाई-6 और कोर स्विचेज का सफलतापूर्वक उद्घाटन किया गया है. इस कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीय कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. इसमें विश्वविद्यालय की आईटी सेल में इन उन्नत उपकरणों का उद्घाटन किया गया. नवीनतम फायरवॉल, सर्वर और कोर स्विचेस विश्वविद्यालय की बाई-फाई सुविधा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. जो कि विश्वविद्यालय के छात्रों, संकाय और कर्मचारियों के लिए नेटवर्क सुरक्षा, डेटा प्रबंधन क्षमताओं को बेहतर बनाएंगे.

अपने उद्बोधन में कुलपति ने कहा कि आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में मजबूत आईटी संरचना का बहुत अधिक महत्व है. उन्होंने कहा, जैसे-जैसे हम डिजिटल विकास को अपनाते जा रहे हैं, साइबर अटैक भी बढते जा रहे हैं, जिससे हमारे नेटवर्क की सुरक्षा अतिआवश्यक है. आईटी सेल में स्थापित नए उपकरण न केवल हमारे महत्वपूर्ण डेटा की सुरक्षा करेंगी, बल्कि हमारे शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों के सुचारू संचालन में मदद करेंगी.

फायरवॉल की बुनियादी सुरक्षा परिभाषा को समझाते हुए, इनचार्ज आईटी

सेल डॉ. रूपेंद्र चौरसिया ने आईटी-सेल में स्थापित उपकरणों के बारे में बताते हुए कहा कि फायरवॉल वह सिस्टम है, जो कम्प्यूटर और कम्प्यूटर नेटवर्क पर साइबर हमले से रक्षा करता है और नेटवर्क में अनचाहे नेटवर्क ट्रॉफिक को रोकता है यह सिस्टम आईटी एडमिन द्वारा सेट किये गये नियमों पर आधारित है. जिससे हमारे डेटा की अखंडता और गोपनीयता सुनिश्चित होती है. इसके साथ आईटी सेल में नए सर्वर की स्थापना भी की गई है जो हमारी डेटा प्रोसेसिंग और स्टोरेज क्षमताओं को काफी बढ़ाएंगे, जिससे हमारे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का सुचारू संचालन और बेहतर प्रदर्शन संभव होगा. कोर स्विचेस हमारे नेटवर्क की गति और विश्वसनीयता को बढ़ाएंगे, जिससे पूरे परिसर में निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी. बाई-फाई कन्ट्रोलर की विशेषता को बताते हुए विश्वविद्यालय के नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटर सचिन सिंह गौतम ने बताया कि विश्वविद्यालय में स्थापित सभी 400 से अधिक बाई-फाई एक्सिस प्वाइंट्स की मानिटरिंग इस सॉफ्टवेयर द्वारा की जा सकेगी. इस अवसर पर आईटी सेल के सभी तकनीकी अधिकारी, मीडिया अधिकारी एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित थे.

देश में मीडिया साक्षरता मिशन चलाये जाने की आवश्यकता : प्रो. के. जी सुरेश

पॉजिटिव और मोटिवेशनल ख़बरों से ही भविष्य की पत्रकारिता उज्जवल होगी : प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग के तत्त्वावधान में मीडिया संवाद श्रृंखला के तहत मीडिया साक्षरता विषय पर संवाद का आयोजन गौर समिति कक्ष में आयोजित किया गया. आयोजन में मुख्य अतिथि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति प्रो. के. जी. सुरेश थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की.

प्रो. के. जी. सुरेश ने कहा कि आज मीडिया साक्षरता की चर्चा हर जगह हो रही है. मीडिया शिक्षा और मीडिया साक्षरता में अंतर समझना जरूरी है. मीडिया शिक्षा आजीविका के लिए रास्ता बनाती है लेकिन मीडिया साक्षरता हर आम नागरिक के लिए आवश्यक है. आज न्यू मीडिया का युग है. हर व्यक्ति अपने मोबाइल यंत्र के साथ व्यस्त है. एक तरफ जहाँ न्यू मीडिया और इंटरनेट के इस्तेमाल ने लोकतान्त्रीकरण को बढ़ावा मिला है वहीं इससे कई संकट और चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं. हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया से जुड़ गया है. सेल्फी और रील के बढ़ते चलन से कई गंभीर घटनाएं घट रही हैं. इंटरनेट पर फेक कंटेट की भरमार है.

पत्रकारिता पेशे में गेट कीपिंग, सूचनाओं का फिल्टरेशन, पेशागत नियम एवं क़ानून, आचार संहिता अहम एवं जरूरी हिस्सा है. लेकिन नागरिक पत्रकारिता जैसे टर्म इस पेशे की अहमियत को कमजोर कर रहे हैं. एक नागरिक नए तकनीकी यन्त्र का उपयोग करके कंटेंट क्रियेटर हो सकता है, कम्युनिकेटर हो सकता है लेकिन उसे एक पेशेवर पत्रकार कहना उचित नहीं होगा.

आज ग्राउंड रिपोर्टिंग की काफी कमी है. मलइन्फॉर्मेशन, मिसइन्फॉर्मेशन, डिसइन्फॉर्मेशन तीनों चीजें अपनाई जा रही हैं. कोविड महामारी के दौरान हमने अनेकों सूचनाएं सच मानीं जिनका वास्तव में सच से दूर-दूर तक नाता नहीं था. वीडियो और फोटो मॉर्फिंग, साइबर क्राइम, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के माध्यम से मेनुपुलेशन, आर्थिक अपराध, फेक एकाउंट इन सब में लगातार तेजी आती जा रही है. इन सबके प्रति एक जागरूकता और इनको देखने और समझने की क्षमता पैदा करने की महती आवश्यकता है. इसलिए मीडिया साक्षरता को स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए और एक मिशन के रूप में पूरे देश में इसे चलाया जाना चाहिए.

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मीडिया का मतलब अब केवल अखबार नहीं रह गया है. अब घटना घटित होने के तत्काल ही मीडिया में समाचार प्रसारित होने लगते हैं. एक समय था जब पूरी दुनिया ख़बरों के लिए

सुबह अखबार का इन्तजार करती थी लेकिन अब समय बदल चुका है और लोग तत्क्षण ख़बरें देख सुन लेते हैं. आज आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का ज़माना है. रोबोट तकनीक में भी मनुष्य ने बहुत प्रगति कर ली है. लेकिन इसके कई दुरूपयोग भी सामने आ रहे हैं. इसको हमें समझने की जरूरत है. उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि व्यावसायिकता के इस दौर में निष्पक्षता और सच के साथ पत्रकारिता करने की आवश्यकता है. पॉजिटिव ख़बरों और मोटिवेशनल ख़बरों को प्राथमिकता देना चाहिए. तभी भविष्य की पत्रकारिता उज्जवल होगी. उन्होंने कहा कि मीडिया साक्षरता की शुरुआत हम गोद

लिए हुए गाँवों से कर सकते हैं. विश्वविद्यालय के स्नातक विद्यार्थियों के लिए मीडिया साक्षरता का एक प्रश्न-पत्र भी लागू किया गया है. यह एक सकारात्मक पहल है.

कार्यक्रम का संचालन विभाग की शोधार्थी सलोनी शर्मा ने किया. विषय परिचय डॉ. अलीम अहमद खान ने दिया. अतिथि परिचय डॉ. विवेक जायसवाल ने दिया. आभार विभागाध्यक्ष प्रो. कालीनाथ झा ने व्यक्त किया. इस अवसर पर डॉ. संजय शर्मा, डॉ. रजनीश, डॉ. देवेन्द्र विश्वकर्मा, संचार एवं पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थी, शोधार्थी एवं विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के शोधार्थी उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय और एमसीयू के बीच होगा शैक्षणिक एमओयू

संवाद कार्यक्रम में दोनों कुलपतियों ने घोषणा की कि शीघ्र ही डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर एवं माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के बीच शैक्षणिक समझौता किया जाएगा जिसके तहत विद्यार्थी एवं फैकल्टी एक्सचेंज भी होंगे. इसके माध्यम से विद्यार्थी तकनीकी प्रशिक्षण, शोध एवं अन्य अकादमिक गतिविधियों में भाग लेंगे.

'कार्यालयीन कामकाज में तकनीकी भाषा का उपयोग' विषय पर हिन्दी कार्यशाला सम्पन्न

विश्वविद्यालय की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से आज डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.) के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा विश्वविद्यालय के नवनियुक्त प्रयोगशाला सहायकों एवं प्रयोगशाला प्रेष्यों के लिए

'कार्यालयीन कामकाज में तकनीकी भाषा का उपयोग' विषय पर हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई. इस अवसर पर कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों के निदेशक प्रो. नवीन कानगो ने प्रतिभागियों को तकनीकी एवं वैज्ञानिक विषयों में हिन्दी के प्रयोग की महत्ता से अवगत कराया. उन्होंने कहा कि आज समय की मांग है कि हम अपने विद्यार्थियों के लिए न केवल मातृभाषा में पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाएं बल्कि एक ऐसे अकादमिक वातावरण का निर्माण करें जिसमें हिन्दी में तकनीकी विषयों का पठन, पाठन एवं लेखन सहज हो सके.

कार्यशाला के विषय-विशेषज्ञ विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव एवं प्रभारी हिन्दी अधिकारी श्री संतोष सोहगौरा ने प्रतिभागियों को राजभाषा के नियमों, कार्यालयीन कामकाज में हिन्दी के प्रयोग तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण एवं उसके प्रयोग से परिचित करवाया. अपने वक्तव्य में उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी दिशानिर्देशों के तारतम्य में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए हमें अपने कर्तव्यों का निर्वहन करना चाहिए. इस क्रम में उन्होंने समस्त प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे अपनी संबंधित प्रयोगशालाओं में उपकरणों के नाम, प्रमुख सावधानियां, रसायनों एवं अभिकर्मकों के नाम इत्यादि को द्विभाषी में तैयार कर विद्यार्थियों हेतु समुचित स्थान पर प्रदर्शित

करें. अपने वक्तव्य को रोचक एवं संवादात्मक बनाते हुए उन्होंने प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं का दैनन्दिन उदाहरणों के माध्यम से निराकरण किया. कार्यशाला में प्रतिभागियों के लिए तकनीकी शब्दावली पर आधारित प्रश्नोत्तरी भी आयोजित की गई जिसके तीन विजेता प्रतिभागियों कु. अदिति उपाध्याय, श्री अमित कुमार शिव एवं श्री गजेन्द्र सिंह लोधी को पुरस्कार प्रदान किए गए. कार्यशाला में विभिन्न विभागों की प्रयोगशालाओं एवं अन्य अनुभागों में कार्यरत 32 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया. विशिष्ट उपस्थिति सहायक कुलसचिव श्री राजकुमार पाल की रही. कार्यशाला का संचालन राजभाषा प्रकोष्ठ के अनुवादक श्री अभिषेक सक्सेना ने किया विशेष सहयोग श्री विनोद रजक का रहा.

उच्च शिक्षा तक सबकी पहुँच सुनिश्चित करना हमारा उद्देश्य - प्रो. नीलिमा गुप्ता, कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय एवं मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल के बीच हुआ एमओयू

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल के बीच शैक्षणिक समझौते पर हस्ताक्षर हुए. यह शैक्षणिक समझौता कार्यक्रम समझौता भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर में आयोजित किया गया.

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, सीईसी-यूजीसी के निदेशक प्रो. जे. बी. नड्डा एवं मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. संजय तिवारी की गरिमामयी उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुआ.

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस एमओयू के माध्यम से दोनों विश्वविद्यालयों के बीच अकादमिक एवं शोध गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा. राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप मूल्यपरक शिक्षा, कौशल आधारित शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्माण कर उच्च शिक्षा को सर्वसुलभ बनाए जाने के प्रयास को गति मिलेगी और इससे दोनों विश्वविद्यालयों की सहयोगी भूमिका महत्त्वपूर्ण साबित होगी. उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य सकल पंजीयन में वृद्धि करना भी है. हमारा उद्देश्य है कि समाज का कोई भी वर्ग शिक्षा से वंचित न रहे. सबके पास ज्ञान और कौशल के साथ ही इसकी एक प्रामाणिक उपाधि भी हो इसलिए यह प्रयास महत्त्वपूर्ण है. ग्रॉस इनरोलमेंट रेश्यो में वृद्धि उच्च शिक्षा तक सबकी पहुँच को सुनिश्चित करती है.

प्रो. संजय तिवारी ने कहा कि हमारा उद्देश्य उपयोगी पाठ्यक्रमों का निर्माण करना है. समाज का हर तबका उच्च शिक्षा हासिल कर सके, हमें इस दिशा में कार्य करना है. निश्चित रूप से यह शैक्षणिक समझौता बहुत ही उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध होगा. दूरस्थ शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसने शिक्षा तक सबकी पहुँच को आसान बनाया है. इस कार्य में सीईसी का भी सहयोग मिलेगा.

कार्यक्रम का संचालन प्रो. रतन सूर्यवंशी ने किया. आभार ज्ञापन भोज मुक्त विवि के कुलसचिव सुशील मंडेरिया ने किया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय प्रतिनिधि के रूप में भोज मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत,

निदेशक, शोध एवं विकास एवं प्रो. हेरेल थॉमस, प्रवीण राठौर एवं भोज मुक्त विवि के विभिन्न क्षेत्रीय निदेशक, शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे.

देश के ख्यातिलब्ध संस्थानों से एमओयू से शिक्षा एवं शोध के नए आयाम विकसित होंगे - कुलपति

विश्वविद्यालय में ईएमएमआरसी बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट की बैठक सम्पन्न

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एज्यूकेशनल मल्टी मीडिया रिसर्च सेंटर (ईएमएमआरसी) की बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट की 16 वीं बैठक का आयोजन किया गया. इस बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. बैठक में नई दिल्ली से

विशेष रूप से पधारे प्रो. जे.बी. नड्डा, निदेशक, सीईसी, प्रो. के.जी. सुरेश, कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल रहे. बैठक में श्री पी. रघुपति, सदस्य निदेशक ईएमएमआरसी, उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद एवं प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी.उपाध्याय, वित्ताधिकारी श्री कुलदीपक शर्मा भी बैठक में उपस्थिति रहे. ईएमएमआरसी के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी ने बोर्ड ऑफ मैंनेजमेंट की विगत 15वीं बैठक में लिये गये निर्णयों के क्रियान्वयन की जानकारी देते हुये बताया कि विश्वविद्यालय का यह सेंटर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के सफल मार्गदर्शन में निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है.

प्रो. जे.बी. नड्डा, निदेशक, कंसोर्टियम फॉर एज्यूकेशनल कम्यूनिकेशन (सीईसी) ने अवगत कराया कि भारत सरकार लगातार शिक्षा के क्षेत्र में प्रगतिशील कार्ययोजनाओं के साथ आगे बढ़ रही है. कंसोर्टियम फॉर एज्यूकेशनल कम्यूनिकेशन देश के विभिन्न राज्यों में संचालित एज्यूकेशनल मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर्स के माध्यम से नवोन्मेषी बिन्दुओं को अपनी कार्ययोजनाओं में सम्मिलित कर नवीन पाठ्यचर्या के माध्यम से छात्रों के लिए विभिन्न विषयों पर अध्ययन सामग्री तैयार कर अपने पोर्टल के माध्यम से शिक्षा को सुगम बना रहा है. उन्होंने विश्वविद्यालय के ईएमएमआरसी की प्रशंसा करते हुये कहा कि सेंटर हमारे विभिन्न मीडिया सेंटरों में अग्रणी है.

प्रो. के.जी. सुरेश ने सेंटर की प्रगति पर संतोष व्यक्त करते हुये कहा कि नई शिक्षा नीति के सफल संचालन के लिए देश के एज्यूकेशनल मल्टीमीडिया रिसर्च सेंटर (ईएमएमआरसी) की भूमिका महत्वपूर्ण है. इनके द्वारा निर्मित कार्यक्रम बहुउपयोगी एवं सार्थकता से परिपूर्ण हैं. उन्होंने पत्रकारिता के विद्यार्थियों के लिए ईएमएमआरसी की कार्यप्रणाली से अवगत कराने पर जोर दिया और कहा कि इससे न सिर्फ विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम के साथ नया सीखेंगे बल्कि इससे ईएमएमआरसी को भी मैन पावर मिलेगा तथा विद्यार्थियों के नवीन विचारों से नये-नये कार्यक्रम विभिन्न विषयों पर

तैयार करने में मदद मिलेगी. विद्यार्थी ग्राफिक्स एवं वीडियो एडीटिंग जैसी कौशल तकनीक से प्रायोगिक रूप सीख सकेंगे. विभिन्न स्तर पर स्नातक एवं स्नातकोत्तर के लिए निर्धारित विषयों पर तैयार किये गये कार्यक्रम एक नये दृष्टिकोण के साथ एवं संप्रेषणशीलता के साथ बनाये जा रहे हैं. ईएमएमआरसी ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग ही पहचान बनाई है. सेंटर के द्वारा बनाये गये मूक्स पाठ्यक्रम आधारित हैं. यहां की डाक्यूमेंट्री फिल्मों ने कई पुरस्कार अर्जित किये हैं.

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय की यह कोशिश है कि वह देश के ख्यातनाम शिक्षा संस्थानों से एमओयू के माध्यम से परस्पर समझौता अनुबंध कर शिक्षा के लिए अपने द्वार खोले. इससे निश्चित ही शिक्षा के क्षेत्र में नया दृष्टिकोण समझने, नई तकनीक से परिचित होने के साथ-साथ देश के शिक्षा संस्थान भी विश्वविद्यालय की समृद्ध शिक्षा एवं शोध से लाभान्वित होंगे. कुलपति ने विश्वविद्यालय द्वारा समर कोर्स के माध्यम से अपने विद्यार्थियों के साथ-साथ स्कूली विद्यार्थियों के लिए भी समर स्किल कोर्स की कार्ययोजना से बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट को अवगत कराया और कहा कि यह स्किल कोर्स सभी के लिए हैं, इसमें घरेलू महिलायें भी पंजीयन करा सकती हैं. ईएमएमआरसी द्वारा 21 मूक्स ऑनलाईन पाठ्यक्रम तैयार किये गये हैं, जो प्रत्येक सेमेस्टर में स्वयं पोर्टल पर अपलोड किये जाते हैं, जिसमें विश्वविद्यालय के अतिरिक्त अन्य छात्र भी पंजीकृत होते हैं और एनटीए द्वारा इसकी परीक्षा संचालित होती है. भविष्य में मशीन लर्निंग, ए.आई. तथा नैनो टेक्नालॉजी जैसे विषयों में भी मूक्स पाठ्यक्रम तैयार किये जायेंगे.

कुलपति प्रो नीलिमा गुप्ता ने बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट को अवगत कराया है कि विश्वविद्यालय ईएमएमआरसी के माध्यम से शीघ्र ही अल्पकालिक एवं पूर्णकालिक डिप्लोमा एवं सर्टिफिकेट कोर्स प्रारंभ कर रहा है. साथ ही शैक्षिक एवं बहुउद्देशीय पाठ्यक्रमों/विषयों पर बनाई गई शैक्षिक वृतचित्रों को वर्षभर प्रत्येक माह में एक दिवस गौर फिल्म फेस्टीवल के अंतर्गत दिखाई जायेगी. शीघ्र ही इसका कार्यक्रम विवरण प्रसारित किया जायेगा.

शरीर मन बुद्धि एवं आत्मा का एकीकृत विकास योग से संभव

नवीन शिक्षा नीति में मनुष्य के समग्र एकीकृत विकास के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है. शरीर का मन से, मन का बुद्धि से, बुद्धि का आत्मा से, आत्मा का परमात्मा से नाता है. यह नाता योगाभ्यास से और ज्यादा सुदृढ़ सबल और फलीभूत होता है.

फिर भी आज योग के आध्यात्मिक पहलू से ज्यादा शारीरिक और मानसिक पहलू की चर्चा और व्याख्या की जा रही है. ऐसे में योग, वैकल्पिक एवं पूरक चिकित्सा पद्धति पर इस कार्यशाला की उपयोगिता बढ़ जाती है. उक्त उद्गार पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के योग विशेषज्ञ प्रो. राजीव चौधरी ने छह दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में व्यक्त किए. प्रो.चौधरी ने कहा कि योग त्रिस्तरीय प्रभाव आधारित है. योग पूर्णतः वैज्ञानिक प्रायोगिक विद्या है, योग अनुभव आधारित विद्या है, योग प्रत्यक्ष आधारित विद्या है. इसलिए योग को जीवन में प्रत्येक व्यक्ति चाहे बाल अवस्था में, युवावस्था में, प्रौढ़ अथवा व्यस्कावस्था में हो, सभी को अपनाना चाहिए.

कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विश्व में आज योग की लहर है. पूरी दुनिया योग की ओर उन्मुख हो रही है. अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की संकल्पना ने सारे विश्व को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है. योग की स्वास्थ्य संवर्धन एवं संरक्षण में भूमिका के कारण बडे शहरों में योग जीवन पद्धति में शामिल हो चुका है. ऐसे में योग में रोजगार के सुनहरे अवसर निकल रहे हैं. योग वैकल्पिक एवं पूरक चिकित्सा पद्धतिः अवधारणा एवं तकनीक विषय पर इस कार्यशाला

के माध्यम से प्रतिभागी योग के साथ अन्य पद्धतियों के गुणो को जानेंगे और लाभान्वित होंगे. प्रो. गुप्ता ने आगामी अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जोर शोर से मनाने का आव्हान किया.

स्वागत भाषण देते हुए योग विभाग के अध्यक्ष प्रो. भवतोष इंद्र गुरू ने कहा कि योग अनंत आनंद की अनुभूति कराने वाला विषय है. योग से मोह का नाश होता है, संदेह समाप्त हो जाते हैं, स्मृति का पुनरागमन होता है तथा साधक स्वयं में स्थिर हो

जाता है. विशिष्ट अतिथि साँची विश्वविद्यालय के डॉ. उपेन्द्र बाबू खत्री ने कहा कि सार्थक जीवन की प्रक्रिया जानना अधिगम का उद्देश्य है. सार्थक जीवन भौतिक सांसारिक भोग का त्याग कर आत्मिक कल्याण का मार्ग अपनाना है. योग अंतर यात्रा सुनिश्चित करता है तथा परम आनंद का मार्ग प्रशस्त करता है. इस परम आनंद की मस्ती केवल योगी को मिल सकती है. कार्यशाला सत्र का संचालन करते हुए डॉ. नितिन कोरपाल ने कहा कि योग के साथ ही प्राकृतिक चिकित्सा, चुबंक चिकित्सा, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर, मर्म चिकित्सा, तथा आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के विषय विशेषज्ञ इन छह दिवस में प्रतिभागीयों को इन पद्धतियों की अवधारणा एवं तकनीक पर मार्गदर्शित करेंगे. नई दिल्ली से डॉ. दिनेश शर्मा, कानपुर से डॉ. ब्रजेश कश्यप, गाजियाबाद से डॉ. सचिन पवार तथा हरिद्वार से डॉ. कामता प्रसाद साहू विभिन्न सत्रों में कार्यशालाएँ संचालित करेंगे.

आभार ज्ञापित करते हुए डॉ. अरूण साव ने कहा कि यह कार्यशाला आनलाईन तथा प्रत्यक्ष रूप से प्रतिदिन 05:30 सुबह से 11:00 बजे तक चलेगी जिसमें अब तक 360 प्रतिभागी पंजीयन कर लाभ ले रहे हैं. प्रारंभ में रोली मिश्रा ने सरस्वती वंदना पर नृत्य प्रस्तुत किया. दीप प्रज्जवलन के पश्चात विभागीय विद्यार्थीयों ने डॉ. ब्रजेश ठाकुर एवं प्रज्ञा साव के निर्देशन में योगाभ्यासों की प्रस्तुति दी.

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में पर्यटन की असीम संभावनायें

विश्वविद्यालय परिसर एवं आसपास के क्षेत्र में पयर्टन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय में एक समिति का गठन किया है, जिसकी बैठक दिनांक 10 जून 2024 को आयोजित की गई थी. इस समिति की बैठक की अध्यक्षता माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की. इस बैठक में विशेष रूप से आमंत्रित मध्यप्रदेश शासन के एडीएम श्री रूपेश उपाध्याय, ख्यातनाम बिल्डर इंजी. प्रकाश चौबे तथा होटल व्यवसाय से जुड़े हुये श्री दीपक श्रीवास्तव उपस्थित भी थे. इस बैठक में भी विशेष आमंत्रित सदस्य के रूप में शामिल हुये थे. विश्वविद्यालय की ओर से प्रो. डी.के. नेमा, प्रो. नवीन कांगो, एवं डॉ. आर.बी. अनुरागी को इस समिति में सदस्य मनोनीत किया गया है. इस समिति का अध्यक्ष विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग के प्रो. विनोद भारद्वाज को नामित किया गया है. बैठक में प्रो. विनोद भारद्वाज ने विश्वविद्यालय परिसर में पर्यटन की संभावनाओं एवं उनको विकसित करने के लिए अपने विचार रखे. विचारोपरांत पर्यटन स्थल विकास के लिए विभिन्न संबंधित विभागों के विभागाध्यक्षों को आंतरिक सदस्यों में सम्मिलित कर रूपरेखा तय करने के लिए माननीया कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में दिनांक 12.06.2024 को पुनः बैठक का आयोजन किया गया.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि सागर नगर के लिए यह एक गौरव की बात है कि यह नगर पुरातात्विक महत्व रखता है. यहां सागर विश्वविद्यालय अपने भौगोलिक क्षेत्रफल की दृष्टि से किसी हिल स्टेशन से कम नहीं है. लेकिन यहां पर्यटन की असीम संभावनायें होते हुये भी अभी तक इसको विकसित नहीं किया गया है. उन्होंने कहा कि सागर में पर्यटन की असीम संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए ना केवल हमने एक समिति का गठन किया है बल्कि इस दिशा में त्वरित कार्यवाही भी आरम्भ की है. वे स्वयं इस पर्यटन विकास परियोजना की मॉनिटरिंग कर रही हैं. उन्होंने इसके लिये समिति अध्यक्ष प्रो. विनोद भारद्वाज को यथा आवश्यक टीम सदस्य जोडने, इस परियोजना की विस्तृत कार्ययोजना बनाने का निर्देश दिया है.

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि उनकी हार्दिक इच्छा है कि विश्वविद्यालय के प्राकृतिक सौंदर्य को बरकरार रखते हुये इसके कुछ निश्चित चिन्हित स्थानों को विकसित किया जाये. प्रथम चरण में विश्वविद्यालय परिसर स्थित 11 पाइण्ट्स-मिलेनियम गार्डन, 5 म्यूजियम्स (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, अपराधशास्त्र विज्ञान, भूगर्भशास्त्र, प्राणिशास्त्र एवं मानवशास्त्र), बॉटनीकल गार्डन, मेडिसिनल गार्डन, सूर्य उदय एवं सूर्य अस्त के स्थानों का चयन कर वहां व्यू प्वाइंट बनाये जाने तथा उनके विकसित का निर्णय लिया गया है. इसके लिये संबंधितों को अविलम्ब कार्यवाही आरम्भ करने के निर्देश दिये गये हैं. विश्वविद्यालय के पास अपने 05 म्यूजियम हैं. इन म्यूजियम को आमजन के लिए भी खोला जाये, ऐसी मंशा है, जिससे इन

म्यूजियम में रखी पुरातात्विक सामग्रियों के साथ-साथ अन्य प्राचीन धरोहर से सागर नगर के लोगों के साथ-साथ सागर में आने वाले आंगतुक भी परिचित हो सकें.

इस बैठक का उद्देश्य विश्वविद्यालय में मेडीसनल गार्डन, बॉटनीकल गार्डन के साथ-साथ विश्वविद्यालय के भूगर्भशास्त्र विभाग, प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग, प्राणी विज्ञान विभाग, अपराधशास्त्र एवं न्यायिक विज्ञान विभाग एवं मानव विज्ञान विभाग में जो संग्रहालय हैं, उनको उन्नत रूप से विकसित करते हुये डिजीटाइजेशन किया जाये तथा इन्हें सभी के लिए खोला जाये की रूपरेखा तैयार करना था.

विश्वविद्यालय का परफार्मिंग आर्ट विभाग ने अपने यहां बुंदेली संस्कृति के अनुरूप स्थल को विकसित किया है, उसको भी पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जायेगा, जिससे विश्वविद्यालय में आने वाले आगंतुक बुंदेली संस्कृति, वेशभूषा, खान-पान से परिचित हो सकें.

विश्वविद्यालय का बॉटनीकल गार्डन अपने आप में विशिष्ट है, इसको पुनः अधिक उर्जात्मक तरीके से संरक्षित, संवर्धित किया जाये, जिससे लोग यहां आकार इस भागमभाग की जिंदगी में कुछ पल प्रकृति के साथ बिता सकें. इसी प्रकार मेडीसनल गार्डन भैषजिक विज्ञान विभाग में दुर्लभ एवं अनेक रोगों में काम आने वाले पेड पौधों से बना गार्डन हैं, इसमें कई प्रकार के रोगों से बचाव में उपयोग होने वाले मेडीसनल प्लांट लगे हुये हैं. इन जानकारियों से सभी परिचित हों उसके लिए इसको भी पर्यटन की संभावनाओं के अनुरूप विकसित किया जा रहा है.

डॉ. हरीसिंह गौर ने सागर विश्वविद्यालय के लिए इस पहाड़ी का चयन बहुत ही सोच विचार कर किया था. यह स्थान प्रकृति को समेटे हुये है. यहां नैसर्गिक सूर्य उदय का दृश्य अप्रतिम आभा का अहसास कराता है. इसके लिए भी एक ऐसा स्थान निश्चित किया जाये जहां लोग आकर इस अनुभूति को महसूस कर सकें. यहां जो भी आवश्यक सुविधाओं की आवश्यकता है, वह अविलम्ब पूर्ण की जा रही हैं, जिससे यहां लोग कुछ समय ठहर कर प्रकृति का आनंद ले सकें. इसी प्रकार सूर्य अस्त का दृश्य भी बहुत ही मनोरम होता है. विश्वविद्यालय की पहाड़ी से सूर्य अस्त का दृश्य एवं सागर झील में सूर्य के अस्त होते समय का जो परिदृश्य झील में उभरता है, वह अलौकिक है. इन प्राकृतिक नजारों को देखने के लिए स्थानों का चयन आवश्यक है, इसके लिए यह समिति स्थल निर्धारित कर इन स्थानों का विकसित करेगी.

सागर विश्वविद्यालय अपने समृद्ध वनों एवं प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण परिसर के लिए भी प्रसिद्ध है. इसके संस्थापक सर डॉ. हरीसिंह गौर के प्रति सागर नगर के लोगों का असीम प्यार है. सागर में जब भी किसी के यहां कोई मेहमान आता है तो वह अवश्य ही उसे विश्वविद्यालय भ्रमण पर लेकर आता है और यहां सबसे पहले वह डॉ. गौर की मूर्ति के समीप छायाचित्र लेना

चाहता है. गौरमूर्ति और गौर समाधि ऐसे स्थान हैं, जहां लोग आकर्षित हो नमन करने आते हैं, इन स्थानों को विकसित करने की विश्वविद्यालय की योजना है. इसी प्रकार पर्यावरण की दृष्टि से पथरिया जाट वाला रोड भी आकर्षक है, उसको सुबह की सैर के लिये आने वाले लोगों के लिए पाथ-वे का निर्माण किया जा सकता है. विश्वविद्यालय परिसर में वनभूमि एवं वृक्ष पर्याप्त रूप से हैं. कहीं-कहीं तो इतना सघन वन है कि जहां लोग जाना चाहते हैं. सुविधायें न होने से वो इन स्थानों पर नहीं जा सकते. ऐसे स्थानों को भी चिन्हित कर पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किये जाने की योजना बनाई गई है.

दिनांक 10.06.2024 की बैठक में पधारे इंजी. प्रकाश चौबे ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा था कि सर्वप्रथम हमें विश्वविद्यालय के कुछ चुनिंदा स्थानों का देख कर चिन्हित करना चाहिये जहां पर्यटन के दृष्टिकोण से उन स्थानों को विकसित किया जा सके. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में एक प्राकृतिक झील जहां जल ठहरता हो, को भी विकसित किया जाना चाहिये - जहां का सौंदर्य देखने के लिए पर्यटक आ सकें. इसके लिये कुलपति द्वारा गठित समिति ने विश्वविद्यालय के विभिन्न स्थलों का दौरा भी किया है ताकि आगामी रुपरेखा तैयार हो सके.

माननीया कुलपति जी ने विश्वविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के बाहर ऐसे स्थानों को चिन्हित करने पर जोर देते हुये कहा कि हमारे लिए डॉ. गौर की जन्म स्थली एवं सागर विश्वविद्यालय की स्थापना जिन बैरकों में हुई थी, का महत्व है. डॉ. गौर की जन्म स्थली को लोग देखना चाहते हैं. जानकारी के अभाव में वह नहीं देख पाते. ऐसे ही डॉ. रजनीश जिन्हें हम ओशो के नाम से जानते हैं, का सागर विश्वविद्यालय से नाता रहा है. उनके ध्यान स्थान को भी विकसित किया जाना चाहिये.

मध्यप्रदेश शासन में एडीएम के पद पर सेवारत एवं सागर में पदस्थ श्री रूपेश उपाध्याय जी ने बताया कि उन्होंने अपनी पदस्थापना के दौरान कई पुरातात्विक महत्व की जगहों का संरक्षण का कार्य किया है. उन्होंने शिवपुरी की छतरियाँ जो मां की याद में बनाई गई हैं, का जिक्र करते हुये कहा कि सागर भी पुरातात्विक दृष्टि से एक समृद्ध नगर हैं, यहां पर्यटन की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता है. उन्होंने विश्वविद्यालय के घाट रोड एवं उससे लगे हुये वन क्षेत्र को रेखांकित करते हुये कहा कि यहां से सूर्य अस्त का दृश्य बड़ा ही रमणीय होता है. इस घाट रोड को और बेहतर ढंग से विकसित किया जा सकता है. सुबह की सैर के लिए मार्निंग क्लब बनाया जा सकता है. यहां पहाड़ हरयाली एवं सघन वृक्ष हैं. विश्वविद्यालय की भौगोलिकता के साथ-साथ यहां का प्राचीन भारतीय इतिहास एवं पुरातत्व विभाग का संग्रहालय बहुत अच्छा है. संग्रहालय में रखी प्रतिमा शुक वंश के समय की है. इन सभी तथ्यों पर लेखन कार्य भी होना चाहिये जिससे लोग आकर्षित हो सकें.

बैठक में होटल व्यवसाय से जुड़े श्री दीपक श्रीवास्तव जी ने अपने पुराने दिनों को याद करते हुये कहा कि पूर्व में विश्वविद्यालय बहुत स्वच्छ और हरा भरा होता था. यहां का वाटर वर्क्स के पास हम लोग पिकनिक मनाया करते थे. विश्वविद्यालय अभी भी हरा भरा है लेकिन स्वच्छता का अभाव है, इसको दूर कर इसके परिसर को विकसित किया जाना चाहिये. जो भी पर्यटन के हिसाब से स्थानों का चयन किया जाये वहां पर प्रसाधनों की व्यवस्था भी आवश्यक है. खाने के साथ-साथ पानी की पर्याप्त व्यवस्था आवश्यक है.

इस बैठक में विश्वविद्यालय के पांच म्यूजियम वाले विभागों के अध्यक्षों के साथ-साथ विभागाध्यक्ष, फाईन आर्ट एवं परफार्मिंग आर्ट, प्रभारी बॉटनीकल गार्डन बैठक में उपस्थित रहे.

विश्वविद्यालय में पर्यटन की असीम संभावनाओं को दृष्टि में रखते हुये माननीया कुलपति महोदया द्वारा इस दिशा में उठाये गये कदमों से निश्चित ही विश्वविद्यालय पठन पाठन के साथ-साथ अपने वैभवशाली संग्रहालयों, बॉटनीकल गार्डन, मेडीसनल

गार्डन जिसके लिए वह प्रसिद्ध है, इस पर्यटन विकास कार्ययोजना से आम जन भी परिचित हो सकेंगे तथा विश्वविद्यालय की प्राकृतिक सौंदर्यता को देख सकेंगे.

श्रेष्ठ मनुष्य के निर्माण की नींव है योग

शिक्षा का उद्देश्य श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण करना है. योग श्रेष्ठ मनुष्य के निर्माण की नींव है. उक्त उद्गार शिक्षा अध्ययन शाला के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार जैन ने योग वैकल्पिक एवं पूरक चिकित्सा पद्धति पर 06 दिवसीय कार्यशाला में व्यक्त किए. प्रो.

जैन ने आगे कहा कि योग शरीर मन और मस्तिष्क का विज्ञान है और मन मस्तिष्क का उपयोग कर मनुष्य शरीरधारी प्राणीयो में श्रेष्ठ हो जाता है. इस शरीर का मन मस्तिष्क से तालमेल बैठाने में योग एक सेतु के समान कार्य करता हैं. प्रो. जैन ने इस प्रतिद्वंद्विता आपाधापी के युग में शांति का मार्ग सुगम कराने में योग की भूमिका रेखांकित करते हुए योग को वर्तमान युग की आवश्यकता बताया. कार्यशाला में नई दिल्ली के आयुर्वेदाचार्य डॉ. दिनेश शर्मा ने आहार का रोगशमन में महत्त्व बताते हुए पंचकर्म विधियाँ पर भी प्रकाश डाला. प्राकृतिक चिकित्सक कानपुर के डॉ. ब्रजेश कश्यप के पंचतत्त्वों-जल पृथ्वी, वायु, अग्नि और आकाश के माध्यम से रोगों की चिकित्सा पर वृहद विवेचन प्रस्तुत किया. डॉ. नितिन कोरपाल ने सत्र में प्रायोगिक अभ्यास

कराते हुए सूक्ष्म व्यायाम का शारीरिक माँसपेशियों, जोडों, विभिन्न संस्थानों पर प्रभाव उपस्थित प्रतिभागीयों को समझाया. डॉ. अरूण कुमार साव ने विभागीय गतिविधियों सहित आगामी अंतर्राष्ट्रीय योग पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागीता की अपील की. डॉ. ब्रजेश सिंह ठाकुर ने केन्द्रीय जेल में चल रहे 10 दिनों योग शिविर में बंदीयों को जीवन में सुधार पथ पर अग्रसर होने में योग, ध्यान, भक्ति तथा नैतिक मूल्यों की भूमिका पर प्रकाश डाला.

इस अवसर पर कामिनी चौबे ने महिला सशक्तीकरण पर गीत प्रस्तुत किया तथा स्नातक द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थीयों ने योगाभ्यास की प्रस्तुती दी. बीएमसी से डॉ. संजय जैन, जिला आयुष अधिकारी डॉ. जोगेन्द्र ठाकुर अपने स्टाफ सहित उपस्थित थे.

रिमोट सेंसिंग जीवन का अभिन्न अंग है - कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में रिमोट सेंसिंग पर समर कौशल कार्यक्रम आरम्भ

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के सामान्य एवं व्यावहारिक भूगोल विभाग द्वारा रिमोट सेंसिंग एवं जीआईएस पर दो सप्ताह का समर कौशल कार्यक्रम आरम्भ हुआ. कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर की कुलपति प्रो.

नीलिमा गुप्ता ने किया. प्रो. गुप्ता ने बताया कि कई वर्षो से इस बात की कमी महसूस की जा रही थी कि यह ख्यातिनाम विश्वविद्यालय किस प्रकार से अपने परिसर से बाहर निकल कर आमजन के लिये भी उनके ज्ञान संवर्द्धन एवं रोजगारपरक क्षमता विकास में सहयोग कर सकता है. इसके लिये कुछ छोटी अवधि के कौशल विकास कोर्स आरम्भ करने की आवश्यकता महसूस हुई और हमने इसी सत्र से इस विचार की क्रियान्विति कर दी.

प्रो. गुप्ता ने कहा कि वर्तमान में हम सभी की लोकेशन किसी से अंजान नहीं है. हमारे मूवमेंट्स का पता करना अब बड़ी बात नहीं रह गई है. आज घर बैठे-बैठे हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति होना, आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस के माध्यम से अपनी कल्पनाओं को साकार कर लेना सूचना प्रौद्योगिकी का ही कमाल है. कभी किसी समय में किसी शहर अथवा गांव का नक्शा प्राप्त करना बहुत जटिल काम होता था, जबकि आज कोई भी व्यक्ति घर पर बैठकर खुद अपने घर की ग्लोबल लोकेशन मालूम कर सकता है. आजकल हमारे मूवमेंट्स भी ग्लोबल कोर्डिनेट्स के द्वारा ट्रैक हो रहे हैं. इस तकनीकी ने संसाधनों के भण्डारों के परिमाण एवं उनके भौगोलिक विस्तार के बारे में जानकारी देने के साथ-साथ बडे बडे संस्थानों में ह्यूमेन रिसोर्स प्रबंधन में बड़ी सहायता की है.

प्रो. गुप्ता ने कहा कि आज के समय में सटीक मौसम अनुमान, वायुयान संचालन, राष्ट्रीय सुरक्षा, वन प्रबंधन, कृषि एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों एवं आपदाओं की मैपिंग के लिये रिमोट सेंसिंग प्रणाली का उपयोग हो रहा है. अतः यह कहा जा सकता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रिमोट सेंसिंग तकनीकी हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन गई है. इस क्षेत्र में हो रहे नित नये अनुसंधान निश्चित ही इसमें विकास की संभावनाओं के नये-नये द्वारा खोलते जा रहे है.

उन्होंने प्रशिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज का समय अपनी लोकेशन पर बैठकर अधिकतम क्षमता विकास अर्जित करने का है ताकि आवागमन एवं प्रवास की बहुत सारी समस्याओं को भी हल किया जा सकता है और अपना दैनिक काम भी बाधित नहीं होता है. उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण सहित विश्वविद्यालय द्वारा इस ग्रीष्मावकाश में आयोजित करवाये जा रहे अधिकांश समर कौशल प्रशिक्षणों को इसीलिये ऑनलाइन मोड पर आयोजित करवाया जा रहा है, ताकि ना केवल हमारे विश्वविद्यालय के वरन देश के किसी भी कोने से लाभार्थी इन प्रशिक्षणों को ज्वॉइन कर सकते हैं. कुलपति ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को वर्तमान समय के अनुरूप अपनी क्षमता एवं योग्यता विकसित करने तथा रोजगार के बदलते परिदृश्य में अपने आपको योग्य साबित करने की दिशा में आगे बढने का संदेश दिया. उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण में देश के विभिन्न भागों से जुडे लाभार्थियों के उत्साह को देखकर हमें यह प्रेरणा भी मिल रही हैं कि हमारा विश्वविद्यालय क्षमता विकास व रोजगारोन्मुख दक्षता के और भी इसी प्रकार के शार्ट टर्म कोर्स आयोजित करवायेगा.

विश्वविद्यालय में नवाचार एवं समर स्किल प्रोग्राम के अध्यक्ष तथा इस रिमोट सेंसिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में देश के 13 राज्यों तथा 1 केन्द्र शासित प्रदेश से कुल 80 प्रशिक्षणार्थी रजिस्टर्ड हुए है. इसमें सबसे ज्यादा 39 प्रशिक्षणार्थी मध्यप्रदेश से रजिस्टर्ड हैं तथा राजस्थान से 34 प्रशिक्षणार्थी हैं. इसमें पूर्वोत्तर राज्यों नागालैण्ड, मिजोरम, आसाम, मेघालय तथा दक्षिणी राज्यों तमिलनाडू व केरल से भी प्रशिक्षणार्थी जुडे हुए हैं. उन्होंने बताया कि यह प्रशिक्षण पूर्णतः ऑनलाइन मोड पर आयोजित करवाया जा रहा है जो कि 15 जून से 28 जून तक चलेगा. प्रो. भारद्वाज ने कहा कि हम इस कार्यक्रम के अलावा सूचना प्रौद्योगिकी आधारित और भी नये प्रशिक्षण कार्यक्रम की योजना तैयार कर रहे हैं.

कार्यक्रम में अजमेर राजस्थान के सोफिया कॉलेज की प्रोफेसर मोनिका कन्नन ने रिमोट सेंसिंग जीआईएस की पृष्ठभूमि तथा उपयोगिता के बारे में तथा गोवा के चोगुले कॉलेज के प्रोफेसर नन्दकुमार सावंत ने भारत में रिमोट सेंसिंग जीआईएस तकनीकि विकास के बारे में सत्र आयोजित किये.

कार्यक्रम के आरम्भ में भूगोल विभाग के डॉ. सथीश सी. ने सभी का स्वागत किया तथा डॉ. आर.बी. अनुरागी ने धन्यवाद ज्ञापन किया. सत्र संचालन शोधार्थी राहुल मिश्रा ने किया.

लक्ष्य तय करो हासिल होने तक न रूको - कर्नल रविकेशवन

विद्यार्थियों को अध्ययन काल में लक्ष्य तय करना चाहिये और तब तक नही रूकना चाहिए जब तक कि उसे हासिल न कर लें. रूकावटे बाधाएँ जीवन में समय की परीक्षा के तौर पर आती हैं परन्तु साहसी आत्मबलवादी विद्यार्थी ही विजयश्री प्राप्त

करते हैं. धैर्य अनुशासन और ज्ञान साधना के बल पर व्यक्ति असाधारण उपलब्धियॉ प्राप्त कर सकता है और ये सभी गुण योग शिक्षा से प्राप्त होते हैं. उक्त उदगार 12 मराठा लाइट इन्फेंट्री यूनिट के कमांड अधिकारी कर्नल ए. रविकेशवन ने योग शिक्षा विभाग डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित 06 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र में व्यक्त किए. कर्नल रविकेशवन ने आगे कहा कि योग आध्यात्मिक साधना की विद्या है जो हमें जीवन में अनुशासन सिखाती है आत्मबल विकसित करती है तथा हार नहीं मानने की प्रवृत्ति जाग्रत करती है. योग जीवन का संयोजन और जीवन में समायोजन की विद्या है जिसके माध्यम से हम भौतिक स्थूल स्तर से सूछम जगत में प्रवेश कर मुक्ति को पाते हैं.

हरिद्वार से पधारे विशेषज्ञ डॉ कामता प्रसाद साहू ने कहा कि योग चित्त का विज्ञान है जो अभ्यास और साधना के माध्यम से मन और चित्त पर विजय प्राप्त कराता है. गाजियाबाद के डॉ सचिन पॅवार ने एक्यूप्रेशर एक्यूपंचर कपिंग थेरेपी चुंबक चिकित्सा योग चिकित्सा पर कार्यशालाएँ संचालित करते हुए विद्यार्थियों को इन चिकित्सा पद्धतियों के सिद्धांतो एवं प्रयोगों को समझाया. डॉ पवार ने इन पद्धतियों का रोगों में कैसे उपयोग करना है इसका विद्यार्थियों पर ही प्रयोग कर प्रशिक्षण दिया.

स्वागत भाषण देते हुए योग विभागाध्यक्ष प्रो भवतोष इंद्र गुरू ने कहा कि हमें सफलताओं की प्राप्ति के लिए जीवन को योगमय बनाना होगा. मनुष्य जीवन असाधारण से असाधारण की यात्रा है जिसमें अग्रसर व्यक्ति ब्रह्म ज्ञान प्राप्त कर निज स्वरुप को

प्राप्त होता है. सत्र के प्रारम्भ में स्नातक छात्रा विधि चौबे ने कत्थक शैली में प्रभु वंदना प्रस्तुत की. स्नातकोत्तर छात्रा मानसी मिश्रा ने नृत्य के माध्यम से योगेश्वर कृष्ण की स्तुति की. रिमझिम दुबे ने योगाभ्यास प्रदर्शन किया.

कार्यशाला का संचालन करते हुए डॉ नितिन कोरपाल ने कहा कि यह 06 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला अंतर विश्वविद्यालय केंद्र योग विज्ञान बैंगलोर के केम्प ऑफिस नई दिल्ली के सहयोग से आयोजित की गई जिसमें आनलाईन और प्रत्यक्ष रूप से

कुल 350 से ज्यादा प्रतिभागियों ने शामिल होकर योग वैकल्पिक एवं पूरक चिकित्सा पद्धतियों की अवधारणा और तकनीक को समझा एवं जाना. डॉ नितिन कोरपाल ने बताया कि प्रतिदिन प्रात: 05:30 से 07:30 बजे तक प्रायोगिक कार्यशाला सत्र हुए तथा 07:30 से 11:00 बजे तक सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कार्यशाला सत्र हुए जिसमें रायपुर से प्रो राजीव चौधरी सॉची से डॉ उपेन्द्र खत्री नई दिल्ली से डॉ दिनेश शर्मा एवं कानपुर से डॉ ब्रजेश कश्यप ने व्याख्यान से प्रतिभागीयों को लाभान्वित किया. आभार ज्ञापित करते हुए डॉ अरूण साव ने कहा कि ये समस्त आयोजन दसवें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के संदर्भ में किए जा रहे हैं. 19 एवं 20 जून को योगासन, रंगोली, पोस्टर, भाषण, कविता और निबंध प्रतियोगिताएँ योग विभाग में आयोजित की गई हैं. 21 जून को प्रात: 05:30 बजे से कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में महर्षि पतंजलि भवन में सम्पन्न होगा. इस कार्यशाला के साथ ही डॉ ब्रजेश ठाकुर केंद्रीय जेल में दस दिवसीय योग शिविर भी राहुल साहू तथा लंबोदर पटेल के साथ संचालित कर रहे हैं. कार्यक्रम में 36 शाहबाज डिवीजन की शिक्षाधिकारी ले. कर्नल चानू, डॉ संजय जैन मेडिकल कालेज, डॉ रविकांत खरे, प्रज्ञा साव, शिवानी राजपूत, इकबालजीत सिंह, अंकित सोनी, रोहित पटेल सहित प्रतिभागी उपस्थित थे.

शोधकर्ता डॉ. मिनी भारती अहिरवार का जापान में पोस्ट डॉक्टोरल फ़ेलोशिप के लिए चयन

रसायनशास्त्र विभाग की पूर्व-शोधार्थी डॉ. मिनी भारती अहिरवार, पलेरा, टीकमगढ़ (म.प्र.) निवासी पिता, रामभरोसे अहिरवार, माता, सुमित्रा अहिरवार, का क्योटो विश्वविद्यालय, क्योटो, जापान में पोस्टडॉक्टोरल अध्ययन के लिए चयन हुआ

है. हाल ही में डॉ. मिनी ने रसायन विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर, (म.प्र.) से पीएचडी की डिग्री, पर्यवेक्षक डॉ. मिलिंद एम. देशमुख (सहायक प्राध्यापक) के मार्गदर्शन में प्राप्त की. डॉ. मिनी भारती ने इस विश्वविद्यालय से 2017 में स्नातक, 2019 में स्नातकोत्तर, और 2023 में पीएचडी डिग्री प्राप्त की. इन्होंने अपने शोध कार्य को अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स जैसे कि 5 अमेरिकन केमिकल सोसायटी (ACS), 5 रॉयल सोसायटी ऑफ केमिस्ट्री (RSC), 5 वाइली (Wiley), और 1 जर्नल ऑफ केमिकल साइंसेज (JCSC), (कुल 16) में प्रकाशित किया. डॉ. मिनी 27 जून, 2024 को जापान के लिए रवाना होंगी. उनके पोस्टडॉक्टरल अध्ययन के लिए विभागाध्यक्ष, पर्यवेक्षक, शिक्षकगण, परिजन, सहपाठियों एवं मित्रों ने बधाइयाँ और शुभकामनाएँ दी.

बुंदेली सांस्कृतिक प्रस्तुतियों पर केंद्रित कार्यशाला आयोजित

मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय, भोपाल एवं संस्कृति परिषद डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संयुक्त तत्वावधान में 'बुंदेलखंड भ्रमणशील कार्यशाला' का आयोजन दिनांक 7 जून से 14 जून 2024 तक डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर

(मध्यप्रदेश) में किया गया. कार्यशाला प्रतिदिवस 4 चरणों में संचालित हुई. आयोजन के स्थानीय समन्वयक डॉ. राकेश सोनी रहे. इस आयोजन पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि दोनों संस्थाओं के विद्यार्थियों के संगम से एक दूसरे को सीखने का अवसर मिला है. इससे दोनों संस्थाएं एवं विद्यार्थी लाभान्वित हुए. भविष्य में भी ऐसी साझेदारी अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं से की जाएगी.

आयोजन के प्रथम चरण में नाट्य विद्यालय के छात्रों को क्षेत्रीय संस्था श्री कृष्ण संस्कृतिक विकास संस्थान समिति द्वारा बुंदेली लोक नृत्यों का प्रशिक्षण दिया गया. जिसमें बुंदेलखंड के लोक नृत्य में प्रमुख रूप से बधाई नृत्य, नौरता नृत्य, बरेदी नृत्य, जावरा नृत्य का प्रशिक्षण छात्रों ने प्राप्त किया. दूसरे चरण में बुन्देलखण्ड की लोक संस्कृति पर विद्वनों द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया. जिसमें विभिन्न विषयों पर विभिन्न विद्वनों ने छात्रों के समक्ष अपना व्यख्यान दिया. बुदेली लोक

सांस्कृतिक धरोहर इसके संरक्षण व सवर्धन में रंगमंच की भूमिका विषय पर श्री पंकज तिवारी, बुंदेली लोकगीत पारंपरिक गीतों एवं सोलह संस्कारों से संबंधित गीतों का लोक जीवन से अन्तर्सम्बन्ध, उनका महत्व एवं गायकी" विषय पर श्री शिवरतन यादव, बुंदेली लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाले लोक वाद्य यंत्र उनका इतिहास और महत्व विषय पर डॉ. ललित मोहन, बुंदेली लोक नाट्य-स्वांग, लोक नाट्य स्वांग का इतिहास, शैली एवं वर्तमान स्वरूप एवं सैद्धांतिक व व्यवहारिक पक्ष विषय पर डॉ. संतोष साहू, बुंदेली

लोक गाथा जानकारी एवं प्रदर्शन पर व्याख्यान श्री ओम प्रकाश चौबे, बुंदेली लोक साहित्य (गद्य और पद्य) पर संवाद सत्र में डॉ. राजेन्द्र यादव, बुंदेलखंड और रंगमंच" पर व्याख्यान डॉ. राकेश सोनी, कहानी लेखन एवम उसके महत्त्व विषय पर डॉ. आशुतोष मिश्रा, बुन्देखण्ड के नाट्य और लोक नाट्य विषय पर राजेन्द्र दुबे द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया. जिसमें विद्यार्थियों को बुन्देलखंड की लोक संस्कृति और लोक जीवन को समझने का मौका मिला. तीसरे चरण में प्रतिदिन प्रोडक्शन क्लास संजय श्रीवास्तव द्वारा की गई जो अगले महीने नाट्य विद्यालय द्वारा आयोजित नाटक की तैयारी का हिस्सा है. नाटक का निर्देशन संजय श्रीवास्तव द्वारा किया जा रहा हैं. चौथे चरण में लोक कलाओं अवलोकन छात्रों द्वारा किया गया जिसमें स्वांग श्री संतोष पाण्डेय एवं दल द्वारा, बधाई श्री जुगल नामदेव एवं दल, नौरता श्री धुवा नामदेव एवं दल, ग्राम भ्रमण करवाये जाने हेतु श्री शुभम पाण्डेय एवं दल, ढिमराई श्री लीलाधर रायकवार एवं दल, बरेदी श्रीकृष्ण लोक सांस्कृतिक विकास संस्थान समिति, लोकगीत सुश्री कावेरी प्रजापति एवं दल, राई नृत्य का अवलोकन श्री रामसहाय पाण्डेय एवं दल द्वारा प्रस्तुत किया गया.

चैतन्य चेतना का साधक ही योगी - डॉ. त्रिपाठी

भारत भूमि पर भारत माता की संतान के रूप में जीवन पाना गौरव की बात है. इस गौरवशाली परंपरा में एक व्यक्ति को चैतन्य चेतन बना रहना आवश्यक है. जैसे बुझी हुई राख में जीवन नही होता, जो पशुवत जीवन जी रहे है उसका कोई सार नही है. चैतन्य चेतना का साधक ही योगी होता है और चैतन्य चेतना की अनुभूति ही योग है. उक्त उद्गार महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय भोपाल के योगाचार्य डॉ.निलिम्प त्रिपाठी ने योग शिक्षा विभाग डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में व्यक्त किए. आचार्य त्रिपाठी ने कहा कि आहार निद्रा भय और मैथुन यदि मनुष्य की प्रवृत्ति है तो सहज आत्मीयता प्रेम करूणा मनुष्य जीवन का स्वभाव. इस स्वभाव का आचरण व्यवहार में उतारकर मनुष्य चैतन्य चेतना को प्राप्त कर सकता है. इसके लिए मनुष्य को योग को अपनाना होगा क्योंकि योग चेतन का विज्ञान है और चित्त पर विजय प्राप्त करने की साधना पद्धति है.

इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने भारत सरकार की मंशा के अनुरूप तीन माह का काऊंटडाऊन मानते हुए समाज को योग से जोड़ने का कार्य किया. इस योग दिवस की थीम स्वयं तथा समाज के लिए योग को सार्थक करते हुए योग विभाग के माध्यम से शहर में योग केम्प लगाये गये. योग शरीर मन बुद्धि और आत्मा का विज्ञान है जो स्वस्थ मनुष्य, स्वस्थ समाज और स्वस्थ राष्ट्र बनाने में सहायक है. स्वागत भाषण देते हुए योग विभागाध्यक्ष प्रो. भवतोष इंद्र गुरू ने कहा कि योग भारतवर्ष के सनातन स्वरूप का सत्य परिचायक है. इस अवसर पर हम संकल्प लें कि शरीर को मन में मन को आत्मा में आत्मा को राष्ट्र में, राष्ट्र को धर्म में, धर्म को ब्रह्म में स्थिर करेंगे.

योग दिवस पर योग विभाग की ओर से केन्द्रीय जेल में डॉ. ब्रजेश ठाकुर, राहुल साहू और लंबोदर पटैल ने 500 से ज्यादा बंदीयों को योगभ्यास कराया. सेना के शाहबाज डिवीजन 36 रैपिड में अंकित सोनी और रोहित पटेल ने 200 से ज्यादा सैनिक अधिकारी, जवान एवं उनके परिजनों को योगाभ्यास कराया. इस अवसर पर विभागीय विद्यार्थियों ने राजपूताना नृत्य, ढ़ाना मिलेट्री केम्प के स्कूली बच्चों ने महाभारत थीम पर योगाभ्यास खेल एवं युवक कल्याण विभाग के प्रशिक्षाणार्थीयों नें मलखंब पर योगाभ्यास तथा योग विभाग के विद्यार्थियों ने योगासनों की प्रस्तुती दी. संचालन डॉ. नितिन कोरपाल ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. अरूण कुमार साव ने किया. इस अवसर पर 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी के कमान अधिकारी कर्नल ए. के. बैन्सला, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सराफ, प्रवीण राठौर,

डॉ. विवेक बी साठे, डॉ. सुमन पटेल, अनवर खान, मनोज दुबे, प्रज्ञा साव, दिनेश तोमर, ख्याति गोस्वामी, चेतना सरकार, दीक्षा भारद्वाज एनसीसी केडेट, शंकरलाल पटेल, डालचंद चौधरी, सुरेंद्र खरे सहित कर्मचारी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.

भूगोल विभाग में भूगोल दर्शन एवं शोध ज्ञान पर व्याख्यानमाला आयोजित

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के भूगोल विभाग में "भूगोल दर्शन एवं शोध ज्ञान" विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. जे.एल. जैन, पूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग उपस्थित रहे. मुख्य वक्ता प्रो. मोनिका कन्नन सोफिया कालेज अजमेर, राजस्थान जबकि अध्यक्षता भूगोल विभाग विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद के. भारद्वाज की उपस्थिति में कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत की गई. पुष्पगुच्छ से स्वागत के पश्चात् डॉ. सतीस सी. ने शब्द सुमनों से सभी अतिथियों का स्वागत किया. शोध ज्ञान में आमंत्रित विभाग के दो शोध छात्रों ने अपना शोध संबंधी अनुभव साझा किया. जिनमें राजनंदिनी गुप्ता ने अर्थ एक्सप्रोलर (यूएसजीएस) के माध्यम से सैटेलाइट इमेजेंज को कैसे डाउनलोड किया जाता है तथा हैण्ड ऑन प्रैक्टिस के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया वही विभाग की दूसरी शोध छात्रा पूनम बुखारा ने साहित्य अवलोकन की क्रियाविधि को ग्राफ के माध्यम से प्रस्तुत किया तथा साहित्य अवलोकन की बारीकियों को साझा किया. भूगोल दर्शन के अंतर्गत विभाग के शिक्षक डॉ. आर.बी. अनुरागी ने 'पर्यटन की संकल्पना एवं सांस्कृतिक भूदृश्य'- मध्यप्रदेश के बुन्देलखंड क्षेत्र के विशेष संदर्भ में अपना वक्तव्य दिया. डॉ. अनुरागी ने बुन्देलखंड में अवस्थित सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों का चित्र के माध्यम से एक-एक का प्रस्तुतीकरण किया तथा उनकी विशेषताओं, कम विकसित होने के कारणों एवं इन पर्यटन

स्थलों को भविष्य में विकसित करने की संभावनाओं पर प्रकाश डाला. मुख्य वक्ता प्रो. मोनिका कन्नन नें भौगोलिक सूचना प्रणाली के माध्यम से अजमेर सिटी में होने वाले अपराध पर अपना वक्तव्य दिया उन्होंने विभिन्न मानचित्रों एवं रेखाग्राफ के माध्यम से अजमेर सिटी में अपराध के केन्द्र बिंदुओं की पहचान को रेखांकित किया. उन्होंने रिमोट सेंसिंग जीआईएस विधि से अपराध क्षेत्रों की पहचान, नियंत्रण और पुलिस तंत्र की सहायता के बारे में जानकारी दी. उन्होंने कहा कि उनकी टीम ने महिलाओं की सुरक्षा एवं सहायता के लिए एक एप्प भी बनाया है, जो कि वहां उपयोग में भी लाया जा रहा है. प्रो. कन्नन ने इस बात को दोहराया कि भौगोलिक ज्ञान और सूचना तकनीकी मिलकर स्थानीय व प्रादेशिक विकास को नई दिशा दे सकते हैं. मुख्य अतिथि प्रो. जे.एल. जैन ने विभागाध्यक्ष संचालित कार्यक्रमों को विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी एवं सार्थक बताया. अध्यक्षता कर रहे विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद के. भारद्वाज ने वक्ताओं द्वारा दिये गये प्रस्तुतीकरण पर प्रकाश डाला और बड़ी संख्या में उपस्थित शोध छात्रों, पी.जी. विद्यार्थियों के लिए इस तरह के कार्यक्रमों को विभाग में संचालित करने के लिए प्रतिबद्धता दोहराई. कार्यक्रम का संचालन डॉ. हेमन्त पाटीदार ने किया तथा आभार डॉ. सतीस सी. ने माना. कार्यक्रम में विभाग के सभी शोध छात्र, स्नातकोत्तर छात्र, पी.आर.सी. आदि के सभी कर्मचारी उपस्थित रहे.

विश्वविद्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक में लिए गए महत्वपूर्ण निर्णय

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की प्रगति की समीक्षा एवं राजभाषा उन्नयन के लिए आवश्यक निर्णय लेने के लिए माननीया कुलपति महोदया प्रो. नीलिमा गुप्ता की अनुमति से भाषा अध्ययनशाला की अधिष्ठाता प्रो. चंदा बैन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गयी. उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का शैक्षिक पाठ्यक्रम द्विभाषी होना चाहिए. विश्वविद्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य-सचिव एवं प्रभारी हिन्दी अधिकारी ज्वाइंट रजिस्ट्रार श्री संतोष सोहगौरा ने बैठक की कार्यसूची प्रस्तुत की. उन्होंने समिति को राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा

आयोजित की गयीं विभिन्न गतिविधियों तथा की गई कार्रवाई से समिति के सदस्यों को अवगत कराया. उन्होंने मंत्रालय द्वारा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवम प्रचार प्रसार को लेकर जारी निर्देशों के बारे में सदस्यों को अवगत कराया. समिति के सदस्यों के सुझाव पर सर्वसम्मित से विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा संस्थान के माध्यम से प्रयोजनमूलक हिन्दी में प्रमाण-पत्र कार्यक्रम संचालित करना, हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने के लिए प्रयास करना, विश्वविद्यालय की गतिविधियों पर आधारित मासिक समाचार-पत्र जारी करना, समस्त विभागों के पाठ्यक्रमों को द्विभाषी में जारी करना, हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए समस्त विभागों द्वारा हिन्दीं दिवस के अतिरिक्त वर्ष में कम-से-कम दो राजभाषा गतिविधि आयोजित करना, सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम केन्द्र के सहयोग से प्रतिमाह आमंत्रित व्याख्यान आयोजित कराना तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के सहयोग से कार्यशाला का आयोजन करने आदि जैसे महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए.

बैठक में मुख्य रूप से प्रो. वर्षा शर्मा, प्रो. आनंद प्रकाश मिश्रा, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अनिल कुमार जैन, प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. नेत्रपाल सिंह, डॉ. आर.टी बेद्रे, डॉ. मोहन टी.ए., श्री कुलदीपक शर्मा, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. विवेक जायसवाल, श्री रूपेन्द्र चौरसिया, श्री राजकुमार पाल, श्री दीपक कुमार शाक्य, श्री आशीष कुमार तिवारी, श्री ब्रजभूषण सिंह आदि शिक्षक एवम अधिकारीगण उपस्थित रहे. आभार ज्ञापन राजभाषा प्रकोष्ठ के श्री अभिषेक सक्सेना ने किया. विशेष सहयोग श्री विनोद रजक का रहा.

विद्यार्थियों के लिए अत्याधुनिक इंफ्राक्ट्रक्चर एवं सुविधाएं उपलब्ध कराना विश्वविद्यालय की प्राथमिकता : कुलपति

नवनिर्मित भवन में स्थानांतरित हुआ पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग

सागर. डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान भवन नवनिर्मित कौटिल्य भवन में स्थानांतरित हो गया है. अब विभाग यहीं से संचालित होगा. कई वर्षों की प्रतीक्षा के बाद विभाग को अत्याधुनिक सुविधाओं युक्त भवन मिला है जिसमें अब विभाग की अध्ययन एवं शोध गतिविधियां संचालित होंगी. कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि विभाग की लंबे समय से मांग थी कि उन्हें अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त भवन उपलब्ध कराया जाए. विवि की प्राथमिकता है कि यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सर्वश्रेष्ठ इंफ्रास्ट्रक्चर एवं सुविधाएं मिलें. भारत सरकार से प्राप्त अनुदान के माध्यम से भवन का निर्माण कराया गया जो उपयोग के लिए तैयार है. विभाग एवं विद्यार्थियों की जरूरतों के अनुसार सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं.

यह भी सुनिश्चित किया जा रहा है कि विद्यार्थियों एवं विभाग के लिए अन्य आवश्यक सहायक सामग्री एवं सुविधाओं को भी उपलब्ध कराया जाए.

विभागाध्यक्ष प्रो डी के नेमा ने बताया कि पूर्व की तुलना में विभाग ज्यादा व्यवस्थित और अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ संचालित होगा. नए सत्र की शुरुआत तक अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं भी सुनिश्चित कर ली जाएंगी. विभागीग प्रयोगशाला एवं लाइब्रेरी के सुचारू संचालन की व्यवस्था की जा रही है. नए भवन में स्मार्ट क्लासरूम, शोधार्थी कक्ष सहित प्रत्येक अकादमिक गतिविधि के संचालन के लिए पर्याप्त कक्षों की उपलब्धता है.

------//------

खबरों में विश्वविद्यालय

'शिक्षक को समाज से जुड़कर काम करने का संकल्प लेना चाहिए'

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विवि के शिक्षाशास्त्र विभाग द्वारा सात दिवसीय सामुदायिक कार्य का समापन शुक्रवार को हुआ। बीते सात दिन में बीए बी-एड, बीएससी बी-एड के आठवें सेमेस्टर के सभी विद्यार्थियों ने विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गए पथरिया जाट, सिरौंजा, बरारू, पटकुई और मैनपानी आदि गांव में शिक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता व पर्यावरण जागरूकता के कार्यक्रम किए। समापन पर विद्यार्थियों ने 'महिला सशक्तिकरण विषय पर एक नुक्कड़ नाटक किया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा शिक्षक समाज का ही व्यक्ति होता है। आप सभी भावी शिक्षक हैं, इसलिए आपको समुदाय के विभिन्न गतिविधियों से न सिर्फ परिचित होना चाहिए, बल्कि समाज में व्याप्त बुराइयों को जड़ से मिटाने का संकल्प भी लेना चाहिए। शिक्षा शास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. अभिषेक कुमार प्रजापति सहित विभाग के सभी शिक्षक और शोधार्थी मौजूद रहे। संचालन आयुषी कुमारी व आभार प्रो. अनिल कुमार जैन ने माना।

विवि में पीजी की दूसरी काउंसिलिंग 5 को

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कोर्स में प्रवेश के लिए दूसरी काउंसिलिंग 5 जून को होगी। आवेदकों का रिपोर्टिंग समय सुबह 10 बजे होगा। प्रवेश प्रकोष्ठ के समन्वयक प्रो. दिवाकर शुक्ला ने बताया समर्थ पोर्टल पर पंजीकृत जो आवेदक पहली काउंसिलिंग में भाग लेने के बाद भी प्रवेश नहीं सके वे इसमें हिस्सा ले सकते हैं। पहले चरण के बाद खाली बची सीटों की जानकारी विवि की वेबसाइट पर जल्दी ही उपलब्ध हो जाएगी।

विवि के केन्द्रीय पुस्तकालय में बायोमेट्रिक मशीन से दर्ज होगी उपस्थिति

सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के जवाहरलाल नेहरू केन्द्रीय पुस्तकालय में कार्यरत समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों की उपस्थिति 03 जून 2024 से बायोमेट्रिक मशीन से ली जाएगी। इसके लिए सूचना जारी कर कर्मचारियों से बायोमेट्रिक मशीन में अंगूठे के निशान देने के लिए आवश्यक रूप से उपस्थित होने के निर्देश जारी किए गए हैं। समस्त अधिकारी/कर्मचारियों को बायोमेट्रिक मशीन में अंगूठा के निशान देने के लिए जवाहरलाल नेहरू केन्द्रीय पुस्तकालय में दिनांक 31 मई 2024 कार्यालयीन समय में आवश्यक रूप से उपस्थित होना है। विश्वविद्यालय की सभी शाखाओं/इकाईयों में बायोमीट्रिक उपस्थिति हेतु मशीनों का इंस्टालेशन चरणबद्ध तरीके से किया जा रहा है।

आयोजन जीवन आपका है इसे आप जैसे चाहें सुन्दर बना सकते हैं

नशा चाहे जितना हसीन हो पर जिंदगी के वैभव से बड़ा नहीं : डॉ. आशुतोष

सागर, आचरण संवाददाता।

युवक छात्रावास में छात्रों के लिए विश्व तम्बाकू दिवस पर एक छात्र परिचर्चा का आयोजन किया गया। प्रो. रत्नेश दास,अध्यक्ष प्रतिपालक परिषद द्वारा छात्रावासीय गतिविधियों में अंतःवासियों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए छात्रावासों में गठित छात्र समितियों में से एक साहित्यिक -सांस्कृतिक समिति ने विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. आशुतोष ने इस अवसर पर अंतःवासियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नशा का अर्थ गुलामी है और गुलामी चाहें जितनी हसीन हो वह ज़िन्दगी से बड़ी नहीं हो सकती। छात्रावास एक ऐसी जगह है जहाँ आप अपनी जिंदगी में मनचाहे रंग भर सकते हैं। अब यह आप पर है कि अपनी ज़िन्दगी में अपनी पसंद के रंग भरते हैं या तम्बाकू का ज़हर। इसलिए हम सबको तम्बाकू से दूर रहने के साथ -साथ अपने आस - पास के लोगों को भी प्रेरित करते रहना है। डॉ. गौतम प्रसाद ने अपने सम्बोधन में कहा कि सभी को तम्बाकू और अन्य तम्बाकू जनित उत्पादों से दूर रहना चाहिए। आप सभी जिस उम्र में हैं उसमें खूब पढ़ना, खूब व्यायाम करना और खेलना बहुत

जरूरी है। जीवन आपका है इसे आप जैसे चाहें सुन्दर बना सकते हैं। छात्रवासी विश्वा गुप्ता ने तम्बाकू निषेध के लिए कानूनी प्रावधानों का तार्किक ढंग से उल्लेख करते हुए तम्बाकू सेवन के शारीरिक, मानसिक, आर्थिक और सामाजिक दुष्प्रभावों पर प्रभावशाली ढंग से अपनी बात रखी। दिव्यांग छात्र प्रवीण उद्दे ने रपट तक हो गई मैं काम ऐसा खास कर डाला, नशे की लत में खुद को यार सत्यानाश कर डाला. गीत के माध्यम से परिचर्चा को गति प्रदान किया। आयुष कुमार मिश्रा ने जीवन पर तम्बाकू और नशा के हानिकारक प्रभावों का उल्लेख करते हुए अपनी बात रखा। नीरज कुमार ने कविता के माध्यम से तम्बाकू उत्पादों का प्रचार कर रहे अभिनेताओं पर एक मार्मिक व्यंग प्रस्तुत किया। प्रो. सुशील काशव के मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन अंतःवासी छात्र ललित नागर ने किया। कार्यक्रम में डॉ. नीरज उपाध्याय, डॉ. अरविन्द गौतम, डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी, रेशमपाल सिंह के साथ ही बड़ी संख्या में अंतःवासी छात्र उपस्थित रहे।

सुविधा कोर्स सीखने के लिए विवि ने आनलाइन पंजीयन व्यवस्था की शुरू

आठ समर स्किल कोर्सेस का आयोजन करेगा विश्वविद्यालय

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में ग्रीष्मकाल में समर स्किल कोर्सेस के आयोजन को लेकर सोमवार को बैठक का आयोजन किया गया। विवि द्वारा समर कोर्स के लिए पंजीयन व्यवस्था भी आनलाइन शुरू कर दी गई है, जिसमें इच्छुक व्यक्ति अपना पंजीयन करा सकेगा।

प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज, विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग ने ग्रीष्मकालीन समर स्किल कोर्सेस की रूपरेखा पर प्रकाश डाला और समिति को अवगत कराया कि विवि इस ग्रीष्मकाल में आठ समर स्किल कोर्सेस का आयोजन कर रहा है। इन समर स्किल कोर्सेस में आइटी स्किल के अंतर्गत एमएस आफिस के साथ-साथ वीडियो एडीटिंग एवं रिमोट सेंसिंग एंड जीएसआई के दो स्किल

सागर। बैठक के दौरान समर कोर्स के संबंध में निर्देश देती हुई कुलपति। • नवदुनिया

कोर्स बनाए हैं। इसी प्रकार आरोग्य एवं स्वास्थ्य के अंतर्गत स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और स्वस्थ्य जीवन शैली पर एक कोर्स डिजाइन किया गया है। यह कोर्स विद्यार्थियों के साथ-साथ समाज के सभी आयु वर्ग के नागरिकों के लिए स्वास्थ्य के प्रति सजगता एवं जागरूकता को दृष्टिगत रखते हुए बनाया गया है। इससे निश्चित ही आज के भागमभाग के समय में इसकी आवश्यकता से इंकार नहीं किया जा सकता है।

लोक वाद्य, गायन एवं बांसुरी भी सीख सकेंगे : परफार्मिंग आर्ट्स विभाग के माध्यम से विद्यार्थियों की अभिरुचि को ध्यान में रखते हुए तीन कोर्स तैयार किए गए हैं। इनमें लोक वाद्य एवं गायन, हल्का संगीत एवं शास्त्रीय वाद्ययंत्र बांसुरी एवं सितार हैं। इन चार साप्ताहिक कोर्स के अंतर्गत विद्यार्थी अपनी अभिरुचि के अनुरूप उक्त पाठ्यक्रमों में पंजीयन कराके अपने स्किल को इम्प्रूव कर सकते हैं। इसी प्रकार जैविक खेती की तकनीक को सिखाने के उद्देश्य से यह कोर्स डिजाइन किया गया है। इसमें कम्पोस्ट का उपयोग, उसका तरीका एवं कैसे कंपोस्ट का सम्मिश्रण तैयार किया जाए। यह एक उपयोगी एवं जैविक खेती के प्रति रूचि पैदा करने वाला पाठ्यक्रम है। इस ग्रीष्मकाल में विद्यार्थी इन कोर्स के माध्यम से अपने फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी के हुनर को और बेहतर ढंग से सीख कर इसका लाभ उठा सकते हैं। यह कोर्स इसी उद्देश्य को ध्यान में रख कर बनाया गया है। विवि इन समर कोर्सेस के लिए विद्यार्थियों एवं आमजन के हित में 8 आनलाइन/आफलाइन कार्यक्रमों का आयोजन करेगा। इन कार्यक्रमों में विश्वविद्यालय में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के अतिरिक्त अन्य विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों, स्कूलों में अध्ययनरत् विद्यार्थी भी भाग ले सकते हैं। विवि ने अपनी वेबसाइट पर पंजीयन के लिए लिंक सोमवार से उपलब्ध करा दी है, जहां पंजीयन करा सकते हैं।

एनसीसी कैडेट्स ने विश्वविद्यालय में पौधरोपण किया

सागर| डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सीनियर डिवीजन एनसीसी कैडेट्स ने विश्व पर्यावरण दिवस पर एनसीसी कार्यालय में पौधरोपण किया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के संरक्षण तथा 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी के कमान अधिकारी कर्नल अरुण कुमार बेंसला के निर्देशन में कार्यक्रम हुआ। संयोजक कंपनी कमांडर लेफ्टिनेंट धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने पर्यावरण को स्वच्छ रखने तथा मानव जाति के उत्थान के लिए यूएनईपी द्वारा निर्दिष्ट वर्ष 2024 की थीम भूमि पुनर्स्थापना, मरुस्थलीकरण और अकाल अनुकूलनशीलता विषय पर व्याख्यान दिया। कैडेट्स को पर्यावरण के प्रति अपने उत्तरदायित्वों का बोध कराया। इस मौके पर अंडर ऑफिसर प्रभाष ओझा, कैडेट रूपल, शिवांग,, हर्षित आदि मौजूद थे।

विवि में तीन नए डिप्लोमा व सर्टिफिकेट कोर्स होंगे शुरू

कुलपति ने कहा- इनका प्रचार-प्रसार करें

भास्कर संवाददाता|सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कम्युनिटी कॉलेज के नोडल अधिकारी एवं स्किल कोर्स कोआर्डिनेट की बैठक कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। नोडल अधिकारी प्रो. सुशील कुमार कासव ने बताया कौशल विकास से संबंधित कोर्स में समाज के सभी आयु वर्ग के अभ्यर्थियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। सर्टिफिकेट, डिप्लोमा कोर्स करके विद्यार्थी नए स्किल में पारंगत हो रहे हैं। कम्यूनिटी कॉलेज के नए सत्र में 3 नए स्किल कोर्स- योगा एंड वेलनेस, इंटीरियर डिजाइनिंग तथा क्ले एंड पिरामिड आर्ट शुरू हो रहे हैं। कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेशित एवं प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को सुगमतापूर्वक अपने सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स पूर्ण करने के लिए सतत मार्गदर्शन दिया जाए। समन्वयक अपने-अपने पाठ्यक्रमों को अपडेट करते रहें। इन पाठ्यक्रमों की जानकारी सभी माध्यमों से प्रचारित प्रसारित की जाए। जिससे सागर एवं आसपास के विद्यार्थी इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेकर अपनी दक्षता बढ़ा सकें। कम्युनिटी कॉलेज में फैशन टेक्नालॉजी, डिजाइनिंग एवं मैनेजमेंट, डिप्लोमा इन टूरिज्म, हिस्टोरिकल टूरिज्म एंड टूरिज्म गाइड, जैव कीटनाशक एवं प्रबंधन, आर्गेनिक फार्मिंग, कंपोस्टिंग टेक्नीक, मशरूम उत्पादन, वेस्ट मैनेजमेंट, पेपर एवं प्लास्टिक वेस्ट रिसाइकिल एण्ड मैनेजमेंट, सोशल रिस्पोंस्विलटी एवं सोशल ऑडिट आदि के सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स कराए जा रहे हैं। जिनमें प्रवेश लेकर महिलाएं, विद्यार्थी और हर वर्ग के लोग दक्षता हासिल कर अपने लिए रोजगार-व्यवसाय चुन सकते हैं। अपने अभिभावकों के व्यवसाय में सहयोग कर परिवार की आय को दोगुना कर सकते हैं। कम्युनिटी कॉलेज के स्किल कोर्स के लिए विवि की वेबसाइट पर पंजीयन 10 जून से शुरू हो जाएंगे। बैठक में प्रो रत्नेश दास, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. वंदना राजौरिया, डॉ. पंकज सिंह, डॉ. नीरज उपाध्याय आदि मौजूद थे।

कम्यूनिटी कालेज द्वारा संचालित स्किल कोर्सेस में प्रवेश प्रारंभ

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में सागर के नोडल अधिकारी एवं स्किल कोर्स कोआर्डिनेट की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। प्रो. सुशील कुमार काशव, नोडल अधिकारी कम्यूनिटी कालेज ने विगत वर्षों में कम्यूनिटी कालेज से विभिन्न कौशल विकास संबंधित कोर्स में पंजीकृत विद्यार्थियों की जानकारी देते हुए कहा कि विवि कम्यूनिटी कालेज के माध्यम से समाज के सभी आयु वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए इन स्किल कोर्सेस के माध्यम से प्रशिक्षित कर रहा है। इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश लेकर विद्यार्थी अपनी अभिरूचि के अनुरूप पाठ्यक्रम का चयन कर इनमें प्रवेश लेकर अपनी न सिर्फ शैक्षणिक योग्यता बढ़ा रहा है बल्कि इन सर्टिफिकेट, डिप्लोमा कोर्सेस को करके एक नये स्किल में पारंगत हो रहा है। कम्यूनिटी कालेज नवीन सत्र से तीन नए स्किल कोर्सेस भी प्रारंभ कर रहा है। इनमें योगा एण्ड वेलनेस, इंटीरियर डिजाइनिंग व क्ले एण्ड पिरामिड आर्ट शामिल हैं।

पुरातत्व संग्रहालय को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने का काम करेंगे: उपाध्याय

भास्कर संवाददाता|सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग के पुरातत्त्व संग्रहालय का अपर कलेक्टर रूपेश उपाध्याय ने भ्रमण किया। यहां एरण से प्राप्त गुप्त कालीन नृवराह की विशाल प्रतिमा को देखते हुए कहा कि यह प्रतिमा एक अद्वितीय प्रतिमा है। विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे एवं शिक्षकों ने उन्हें पुरातत्व संग्रहालय का भ्रमण कराया गया।

संग्रहालय की वैष्णव दीर्घा, शैव दीर्घा, शाक्त दीर्घा, जैन दीर्घा, गौण देव दीर्घा एवं उत्खननों एवं सर्वेक्षणों से प्राप्त पुरा सामग्रियों की जानकारी दी। उपाध्याय ने पुरातत्त्व संग्रहालय में संग्रहीत प्रतिमाओं एवं पुरा सामग्रियों को सागर एवं बुंदेलखंड की संस्कृति के लिए महत्वपूर्ण एवं अद्वितीय संग्रह बतलाया। उन्होंने जिला प्रशासन के माध्यम से विवि के पुरातत्व संग्रहालय को एक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने का आश्वासन भी दिया।

पुरातत्व संग्रहालय के भ्रमण के दौरान ईएमआरसी के निर्देशक डॉ. पंकज तिवारी, सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष डॉ. संजीव सराफ, डॉ. केके राव, इंक मीडिया के निर्देशक डॉ. आशीष द्विवेदी एवं विभाग के डॉ. सुरेंद्र कुमार यादव, डॉ. शिवकुमार पारोचे, डॉ. मशकूर अहमद कादरी आदि मौजूद थे।

सागर। विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय का निरीक्षण करते अधिकारी।

संग्रहालय में नृवराह की गुप्तकालीन प्रतिमा अद्वितीय : रूपेश उपाध्याय

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विवि के पुरातत्व संग्रहालय का अपर कलेक्टर रूपेश उपाध्याय ने शुक्रवार को भ्रमण किया। उपाध्याय ने कहा एरण से प्राप्त गुप्तकालीन नृवराह की विशाल प्रतिमा अद्वितीय प्रतिमा है। उन्होंने कहा कि यहां प्राचीन प्रतिमाएं हैं। बुंदेलखंड की संस्कृति के लिए यह महत्वपूर्ण है। विभागाध्यक्ष प्रो. नागेश दुबे ने संग्रहालय की वैष्णव, शैव, शाक्त, जैन एवं गौण-देव की जानकारी दी। इस मौके पर इतिहास विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीके श्रीवास्तव, डॉ. पंकज तिवारी, डॉ. संजीव सराफ, डॉ. केके राव, डॉ. आशीष द्विवेदी, सुरेन्द्र कुमार यादव, डॉ. शिवकुमार पारोचे एवं मशकूर अहमद कादरी आदि उपस्थित हुए।

विश्व पर्यावरण दिवस पर विभागीय परिसर में लगाए गए पौधे

सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के शिक्षा शास्त्र विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में विभागीय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें शिक्षा शास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो अनिल कुमार जैन, सभी शिक्षकगण, गैर शैक्षणिक एवं छात्र छात्राओं ने पौधा रोपण किया। इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष ने विद्यार्थियों को पर्यावरण को स्वच्छ रखने कम से कम एक पौधे को गोद लेने का संकल्प दिलाया।

पर्यवारण अध्ययन का क्षेत्र प्रासंगिक एवं अपार संभावनाओं से भरा है

सागर : डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में पर्यावरण विज्ञान विभाग द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस मनाया गया। इस अवसर पर वृत्तचित्र प्रदर्शन, पोस्टर प्रतियोगिता और एक विशेष व्याख्यान सम्मिलित थे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता आइआइटी हैदराबाद के जलवायु परिवर्तन विभागाध्यक्ष, डा. आसिफ क़ुरैशी थे। उन्होंने'जलवायु परिवर्तन और इसके स्वास्थ्य पर प्रभाव' विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि पर्यावरण विज्ञान के क्षेत्र में कैरियर में अपार संभावनाएं हैं। इस कार्यक्रम का संयोजन डा. मुकेश कुमार कंवर, सहायक प्राध्यापक, पर्यावरण विज्ञान विभाग ने किया। कार्यक्रम के समन्वयक डा. अमित कुमार, डा. श्वेता शर्मा और डा. सत्यम वर्मा, सहायक प्रोफेसर थे। इस अवसर पर स्वागत वक्तव्य प्रो. एमएल खान ने दिया एवं डा. सत्यम वर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

कम्युनिटी कॉलेज द्वारा संचालित स्किल कोर्सेस में 10 जून से प्रवेश प्रारंभ

जागरण, सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के कम्युनिटी कॉलेज के नोडल अधिकारी एवं स्किल कोर्स कोआर्डिनेट की एक बैठक का आयोजन किया गया। प्रो.सुशील कुमार काशव नोडल अधिकारी कम्युनिटी कॉलेज ने कहा कि विश्वविद्यालय कम्युनिटी कॉलेज के माध्यम से समाज के सभी आयु वर्ग के अभ्यर्थियों के लिए इन स्किल कोर्सेस के माध्यम से प्रशिक्षित कर रहा है। कम्युनिटी कॉलेज नवीन सत्र से 03 नये स्किल कोर्सेस भी प्रारंभ कर रहा है। इनमें योगा एण्ड वेलनेस, इंटीरियर डिजाइनिंग तथा क्ले एण्ड पिरामिड आर्ट शामिल हैं। कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने बैठक को संबोधित करते हुये कहा कि कम्युनिटी कॉलेज द्वारा संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेशित एवं प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को सुगमतापूर्वक अपने सर्टिफिकेट एवं डिप्लोमा कोर्स पूर्ण करने के लिए सतत् मार्गदर्शन प्रदान किया जाये। विश्वविद्यालय कम्युनिटी कॉलेज इन स्किल कोर्सेस के लिए शीघ्र ही पंजीयन प्रारंभ कर रहा है। इस हेतु विश्वविद्यालय अपनी बेवसाईट पर पंजीयन हेतु लिंक दिनांक 10 जून 2024 से उपलब्ध कराई जा रही है जहां विद्यार्थी अपने मन चाहे कोर्सेस में निर्धारित शुल्क का भुगतान कर पंजीयन करा सकता है। इसके लिए सभी आयुवर्ग के इच्छुक आमजन भी पंजीयन करा कर इन कोर्सेस में सहभागिता कर सकते हैं।

आधुनिक शैक्षणिक परिदृश्य में मजबूत आईटी संरचना का महत्व अधिक है : कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में अत्याधुनिक फायरवॉल, सर्वर, वायफाई-6 और कोर स्विचेज का उद्घाटन किया गया है। विवि की आईटी सेल में हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की।

कुलपति ने कहा आधुनिक शैक्षणिक परिदृश्य में मजबूत आईटी संरचना का बहुत अधिक महत्व है। उन्होंने कहा जैसे-जैसे हम डिजिटल विकास को अपनाते जा रहे हैं, साइबर अटैक भी बढते जा रहे हैं, जिससे हमारे नेटवर्क की सुरक्षा अतिआवश्यक है। आईटी सेल में स्थापित नए उपकरण न केवल हमारे महत्वपूर्ण डेटा की सुरक्षा करेंगे, बल्कि हमारे शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों के सुचारू संचालन में मदद करेंगे। आईटी सेल प्रभारी डॉ. रूपेंद्र चौरसिया ने बताया फायरवॉल वह सिस्टम है, जो कम्प्यूटर और कम्प्यूटर नेटवर्क पर साइबर हमले से रक्षा करता है और नेटवर्क में अनचाहे नेटवर्क ट्रैफिक को रोकता है। यह सिस्टम आईटी एडमिन द्वारा सेट किये गए नियमों पर आधारित है। जिससे हमारे डेटा की अखंडता और गोपनीयता सुनिश्चित होती है। आईटी सेल में नए सर्वर की स्थापना भी की गई है जो हमारी डेटा प्रोसेसिंग और स्टोरेज क्षमताओं को काफी बढ़ाएंगे। जिससे हमारे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का सुचारू संचालन और बेहतर प्रदर्शन संभव होगा। कोर स्विचेस हमारे नेटवर्क की गति और विश्वसनीयता को बढ़ाएंगे। जिससे पूरे परिसर में निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी। नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटर सचिन सिंह गौतम ने बताया कि विश्वविद्यालय में स्थापित सभी 400 से अधिक वाईफाई एक्सिस प्वाइंट्स की मॉनीटरिंग इस सॉफ्टवेयर द्वारा की जा सकेगी।

साइबर अटैक से सुरक्षित रहेगा विवि का डाटा, हैकिंग व सर्वर की समस्या भी होगी दूर

डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में फायरवाल, सर्वर और कोर स्विचेज का उद्घाटन

नवदुनिया प्रतिनिधि सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सर्वर में तेजी लाने, डाटा चोरी रोकने और हैकिंग जैसी समस्या से निपटने के लिए फायरवाल, सर्वर, वाई-फाई-6 और कोर स्विचेज शुरू किया गया है। इस व्यवस्था के शुरू होने से विवि के सर्वर में अक्सर आने वाली समस्या का निराकरण होगा और कार्यों में तेजी आएगी। वहीं पूर्व में हुई हैकिंग जैसी घटनाओं को रोका जा सकेगा।

विश्वविद्यालय की आइटी सेल में इन उन्नत फायरवाल सर्वर का शुभारंभ कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया, जिससे विवि के वाई फाई की सिक्युरिटी और मजबूत होगी। अब कोई भी व्यक्ति विवि की बेवसाइट को आसानी से हैक नहीं कर पाएंगे और न ही वायरस छोड़ सकेंगे। उल्लेखनीय है कि करीब पांच साल पूर्व पाकिस्तान के एक व्यक्ति द्वारा विवि की बेवसाइट में छेड़छाड़ की थी, जिससे विवि में हड़कंप मच गया था और आनन-फानन में विशेषज्ञों की मदद लेकर इसमें सुधार किया गया था।

इस उन्नत तकनीक से विवि का डाटा सुरक्षित रहे सकेगा और काउंसिलिंग व फीस भरने के दौरान सर्वर बाधित होने जैसी समस्या दूर होगी और कार्य में भी तेजी आएगी।

विश्वविद्यालय मे फायरवाल, सर्वर और कोर स्विचेज की जानकारी लेतीं हुई कुलपति।

शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों में आइटी की महत्वपूर्ण भूमिका – कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि नवीनतम फायरवाल, सर्वर और कोर स्विचेस विश्वविद्यालय की वाई-फाई सुविधा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जो कि विश्वविद्यालय के छात्रों, संकाय और कर्मचारियों के लिए नेटवर्क सुरक्षा, डेटा प्रबंधन क्षमताओं को बेहतर बनाएंगे। आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में मजबूत आईटी संरचना का बहुत अधिक महत्व है। उन्होंने कहा, जैसे-जैसे हम डिजिटल विकास को अपनाते जा रहे हैं, साइबर अटैक भी बढ़ते जा रहे हैं, जिससे हमारे नेटवर्क की सुरक्षा अतिआवश्यक है। आइटी सेल में स्थापित नए उपकरण न केवल हमारे महत्वपूर्ण डेटा की सुरक्षा करेंगी, बल्कि हमारे शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों के सुचारू संचालन में मदद करेंगी।

क्या है फायरवाल सिस्टम

इनचार्ज आइटी सेल डा. रूपेंद्र चौरसिया ने आइटी-सेल में स्थापित उपकरणों के बारे में बताते हुए कहा कि फायरवाल वह सिस्टम है, जो कंप्यूटर और नेटवर्क पर साइबर हमले से रक्षा करता है और नेटवर्क में अनचाहे नेटवर्क ट्राफिक को रोकता है। यह सिस्टम आइटी एडमिन द्वारा सेट किए गए नियमों पर आधारित है, जिससे हमारे डेटा की अखंडता और गोपनीयता सुनिश्चित होती है। इसके साथ आइटी सेल में नए सर्वर की स्थापना भी की गई है जो हमारी डेटा प्रोसेसिंग और स्टोरेज क्षमताओं को काफी बढ़ाएंगे, जिससे हमारे आनलाइन प्लेटफार्म का सुचारू संचालन और बेहतर प्रदर्शन संभव होगा।

400 से अधिक वाई-फाई एक्सिस प्वाइंट्स की मानिटरिंग हो सकेगी

वाई-फाई कंट्रोलर की विशेषता को बताते हुए विश्वविद्यालय के नेटवर्क एडमिनिस्ट्रेटर सचिन सिंह गौतम ने बताया कि विवि में स्थापित सभी 400 से अधिक वाई-फाई एक्सिस प्वाइंट्स की मानिटरिंग इस साफ्टवेयर द्वारा की जा सकेगी। कोर स्विचेस हमारे नेटवर्क की गति और विश्वसनीयता को बढ़ाएंगे, जिससे पूरे परिसर में निर्बाध कनेक्टिविटी सुनिश्चित होगी। इस अवसर पर आइटी सेल के सभी तकनीकी अधिकारी, मीडिया अधिकारी डा. विवेक जायसवाल एवं अन्य कर्मचारी उपस्थित थे।

संवाद | गौर विवि और एमसीयू के बीच होगा शैक्षणिक एमओयू, एमसीयू भोपाल के कुलपति ने दिया मार्गदर्शन

देश में मीडिया साक्षरता मिशन चलाए जाने की आवश्यकता : प्रो. केजी सुरेश

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग के तत्वावधान में सोमवार को गौर समिति कक्ष में मीडिया संवाद श्रृंखला के तहत मीडिया साक्षरता विषय पर संवाद का आयोजन किया गया।

आयोजन में मुख्य अतिथि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति प्रो. केजी सुरेश ने कहा कि आज मीडिया साक्षरता की चर्चा हर जगह हो रही है। मीडिया शिक्षा और मीडिया साक्षरता में अंतर समझना जरूरी है। मीडिया शिक्षा आजीविका के लिए रास्ता बनाती है, लेकिन मीडिया साक्षरता हर आम नागरिक के लिए आवश्यक है। आज न्यू मीडिया का युग है। हर व्यक्ति अपने मोबाइल यंत्र के साथ व्यस्त है। एक तरफ जहां न्यू मीडिया और इंटरनेट के इस्तेमाल ने लोकतान्त्रीकरण को बढ़ावा मिला है वहीं इससे कई संकट और चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं। हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया से जुड़ गया है. सेल्फी और रील के बढ़ते चलन से कई गंभीर घटनाएं घट रही हैं।

गौर समिति कक्ष में मीडिया साक्षरता विषय पर संवाद का आयोजन किया गया। • नवदुनिया

निष्पक्षता और सच के साथ पत्रकारिता करने की आवश्यकता है : प्रो गुप्ता

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मीडिया का मतलब अब केवल अखबार नहीं रह गया है। अब घटना घटित होने के तत्काल ही मीडिया में समाचार प्रसारित होने लगते हैं। एक समय था जब पूरी दुनिया खबरों के लिए सुबह अखबार का इंतजार करती थी, लेकिन अब समय बदल चुका है और लोग तत्क्षण खबरें देख सुन लेते हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से कहा कि व्यावसायिकता के इस दौर में निष्पक्षता और सच के साथ पत्रकारिता करने की आवश्यकता है। पाजिटिव खबरों और मोटिवेशनल खबरों को प्राथमिकता देना चाहिए तभी भविष्य की पत्रकारिता उज्जवल होगी। कार्यक्रम का संचालन विभाग की शोधार्थी सलोनी शर्मा ने किया। विषय परिचय डा. अलीम अहमद खान ने दिया। अतिथि परिचय डा. विवेक जायसवाल ने दिया। आभार विभागाध्यक्ष प्रो. कालीनाथ झा ने व्यक्त किया।

विश्वविद्यालय और एमसीयू के बीच होगा शैक्षणिक एमओयू : संवाद कार्यक्रम में दोनों कुलपतियों ने घोषणा की कि शीघ्र ही डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के बीच शैक्षणिक समझौता किया जाएगा जिसके तहत विद्यार्थी एवं फैकल्टी एक्सचेंज भी होंगे। इसके माध्यम से विद्यार्थी तकनीकी प्रशिक्षण, शोध एवं अन्य अकादमिक गतिविधियों में भाग लेंगे। इस अवसर पर डा. संजय शर्मा, डा. रजनीश, डा. देवेंद्र विश्वकर्मा, संचार एवं पत्रकारिता विभाग के विद्यार्थी, शोधार्थी एवं विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के शोधार्थी उपस्थित थे।

पॉजिटिव और मोटिवेशनल ख़बरों से ही भविष्य की पत्रकारिता उज्जवल होगी: कुलपति

देश में मीडिया साक्षरता मिशन चलाये जाने की आवश्यकता: प्रो. के. जी सुरेश

सागर(एसबीन्यूज) । डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संचार एवं पत्रकारिता विभाग के तत्त्वावधान में मीडिया संवाद श्रृंखला के तहत मीडिया साक्षरता विषय पर संवाद का आयोजन गौर समिति कक्ष में आयोजित किया गया. आयोजन में मुख्य अतिथि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय भोपाल के कुलपति प्रो. के. जी. सुरेश थे एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने की। प्रो. के. जी. सुरेश ने कहा कि आज मीडिया साक्षरता की चर्चा हर जगह हो रही है. मीडिया शिक्षा और मीडिया साक्षरता में अंतर समझना जरूरी है। मीडिया शिक्षा आजीविका के लिए रास्ता बनाती है लेकिन मीडिया साक्षरता हर आम नागरिक के लिए आवश्यक है. आज न्यू मीडिया का युग है. हर व्यक्ति अपने मोबाइल यंत्र के साथ व्यस्त है। एक तरफ जहाँ न्यू मीडिया और इंटरनेट के इस्तेमाल ने लोकतान्त्रीकरण को बढ़ावा मिला है वहीं इससे कई संकट और चुनौतियां भी उत्पन्न हुई हैं. हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा सोशल मीडिया से जुड़ गया है. सेल्फी और रील के बढ़ते चलन से कई गंभीर घटनाएं घट रही हैं। इंटरनेट पर फेक कंटेट की भरमार है. पत्रकारिता पेशे में गेट कीपिंग, सूचनाओं का फिल्टरेशन, पेशागत नियम एवं कानून, आचार संहिता अहम एवं जरूरी हिस्सा है. लेकिन नागरिक पत्रकारिता जैसे टर्म इस पेशे की अहमियत को कमजोर कर रहे हैं. एक नागरिक नए तकनीकी यन्त्र का उपयोग करके कंटेंट क्रियेटर हो सकता है, कम्युनिकेटर हो सकता है लेकिन उसे एक पेशेवर पत्रकार कहना उचित नहीं होगा।

आज ग्राउंड रिपोर्टिंग की काफी कमी है. मलइन्फॉर्मेशन, मिसइन्फॉर्मेशन, डिसइन्फॉर्मेशन तीनों चीजें अपनाई जा रही हैं। कोविड महामारी के दौरान हमने अनेकों सूचनाएं सच मानीं जिनका वास्तव में सच से दूर-दूर तक नाता नहीं था. वीडियो और फोटो मॉर्फिंग, साइबर क्राइम, आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के माध्यम से मेनुपुलेशन, आर्थिक अपराध, फेक एकाउंट इन सब में लगातार तेजी आती जा रही है. इन सबके प्रति एक जागरूकता और इनको देखने और समझने की क्षमता पैदा करने की महती आवश्यकता है. इसलिए मीडिया साक्षरता को स्कूल से लेकर उच्च शिक्षा तक पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाया जाना चाहिए और एक मिशन के रूप में पूरे देश में इसे चलाया जाना चाहिए।

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मीडिया का मतलब अब केवल अखबार नहीं रह गया है। अब घटना घटित होने के तत्काल ही मीडिया में समाचार प्रसारित होने लगते हैं। एक समय था जब पूरी दुनिया ख़बरों के लिए सुबह अखबार का इन्तजार करती थी लेकिन अब समय बदल चुका है और लोग तत्क्षण ख़बरें देख सुन लेते हैं. आज आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का ज़माना है। रोबोट तकनीक में भी मनुष्य ने बहुत प्रगति कर ली है. लेकिन इसके कई दुरूपयोग भी सामने आ रहे हैं।

इसको हमें समझने की जरूरत है. उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि व्यावसायिकता के इस दौर में निष्पक्षता और सच के साथ पत्रकारिता करने की आवश्यकता है. पॉजिटिव ख़बरों और मोटिवेशनल ख़बरों को प्राथमिकता देना चाहिए. तभी भविष्य की पत्रकारिता उज्जवल होगी. उन्होंने कहा कि मीडिया साक्षरता की शुरुआत हम गोद लिए हुए गाँवों से कर सकते हैं. विश्वविद्यालय के स्नातक विद्यार्थियों के लिए मीडिया साक्षरता का एक प्रश्न-पत्र भी लागू किया गया है. यह एक सकारात्मक पहल है।

डॉ. अनामिका को यंग साइंटिस्ट अवार्ड

सागर@पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की रिसर्च एसोसिएट डॉ. अनामिका दुबे को यंग साइंटिस्ट अवार्ड मिला है। अंतरराष्ट्रीय पर्यावरण दिवस को लखनऊ में आयोजित एक समारोह में उन्हें यह अवार्ड प्रदान किया गया। इंटरनेशनल सोसायटी ऑफ एनवायरन बैटल बोटविस्ट (आइएसइबी) द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस पर लखनऊ के नेशनल बाटनिकल रिसर्च इंस्टीट्यूट (एनबीआरआई) में एक सामारोह आयोजित किया गया था। जिसमें डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय की सीनियर प्रोजेक्ट एसोसिएट डॉ. अनामिका दुबे को यंग साइंटिस्ट अवार्ड 2022 प्रदान किया गया। डॉ. अनामिका ने इस उपलब्धि का श्रेय प्रो. एमएल खान, प्रो. अश्विनी कुमार व अपने परिजनों को दिया है।

6 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन आज से

जागरण, सागर। डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में आयुष मंत्रालय एवं शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार से प्राप्त निर्देशों के परिपालन में योग शिक्षा विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस वृहद स्तर पर मनाने की तैयारियां जारी हैं। इसी श्रृंखला में 12-17 जून 2024 को योग वैकल्पिक तथा पूरक चिकित्सा पद्धतिः अवधारणा एवं तकनीक विषय पर 6 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के महर्षि पतंजलि भवन में प्रातः 05. 30 से 11 तक प्रतिदिन कार्यशाला में एक घंटा प्रायोगिक अभ्यास सत्र पंद्रह मिनिट ध्यान तथा पंद्रह मिनिट प्रार्थना होगी। उक्त जानकारी देते हुए योग शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो.भवतोष इंद्र गुरू ने बताया कि कार्यशाला का आयोजन अंतर विश्वविद्यालय केन्द्र योग विज्ञान बैंगलोर केम्प ऑफिस नई दिल्ली के सहयोग से किया जा रहा है। कार्यशाला में अब तक 230 प्रतिभागीयों ने पंजीयन कराया है। इस बार का अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस नारी सशक्तिकरण को समर्पित है। 21 जून को मुख्य कार्यक्रम का आयोजन योग द्वारा नारी सशक्तिकरण विषय पर आयोजित होगा। समस्त कार्यक्रमों के संयोजक डॉ.अरुण कुमार साव, डॉ.ब्रजेश ठाकुर एवं डॉ.नितिन कोरपाल हैं।

एमओयू से दोनों विवि के बीच अकादमिक एवं शोध गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं मध्यप्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल के बीच शैक्षणिक समझौते पर हस्ताक्षर हुए। यह शैक्षणिक समझौता कार्यक्रम भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल परिसर में हुआ। डॉ. हरीसिंह गौर विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, सीईसी-यूजीसी के निदेशक प्रो. जेबी नड्डा एवं भोज मुक्त विवि भोपाल के कुलपति प्रो. संजय तिवारी की मौजूदगी में हुआ।

कुलपति प्रो. गुप्ता ने कहा इस एमओयू के माध्यम से दोनों विश्वविद्यालयों के बीच अकादमिक एवं शोध गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप मूल्यपरक शिक्षा, कौशल आधारित शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्माण कर उच्च शिक्षा को सर्वसुलभ बनाए जाने के प्रयास को गति मिलेगी। इससे दोनों विश्वविद्यालयों की सहयोगी भूमिका महत्वपूर्ण साबित होगी। उन्होंने कहा हमारा उद्देश्य सकल पंजीयन में वृद्धि करना भी है। हमारा उद्देश्य है कि समाज का कोई भी वर्ग शिक्षा से वंचित न रहे। सबके पास ज्ञान और कौशल के साथ ही इसकी एक प्रामाणिक उपाधि भी हो इसलिए यह प्रयास महत्वपूर्ण है।

ग्रॉस इनरोलमेंट रेश्यो में वृद्धि उच्च शिक्षा तक सबकी पहुंच को सुनिश्चित करती है। प्रो. तिवारी ने कहा हमारा उद्देश्य उपयोगी पाठ्यक्रमों का निर्माण करना है। समाज का हर तबका उच्च शिक्षा हासिल कर सके, हमें इस दिशा में कार्य करना है। निश्चित रूप से यह शैक्षणिक समझौता बहुत ही उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध होगा। दूरस्थ शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसने शिक्षा तक सबकी पहुंच को आसान बनाया है। इस कार्य में सीईसी का भी सहयोग मिलेगा। इस मौके पर विवि प्रतिनिधि के रूप में भोज मुक्त विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, निदेशक, शोध एवं विकास प्रो. हेरेल थॉमस, प्रवीण राठौर आदि भी मौजूद थे।

तकनीकी और विज्ञानी विषयों में हिंदी के प्रयोग का महत्व बताया

कामकाज में तकनीकी भाषा के उपयोग पर कार्यशाला आयोजित की गई। • नवदुनिया

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा विश्वविद्यालय के नवनियुक्त प्रयोगशाला सहायकों एवं प्रयोगशाला प्रेष्यों के लिए कार्यालयीन कामकाज में तकनीकी भाषा का उपयोग विषय पर हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई।

कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय की अकादमिक गतिविधियों के निदेशक प्रो. नवीन कानगो ने प्रतिभागियों को तकनीकी एवं विज्ञानी विषयों में हिंदी के प्रयोग की महत्ता से अवगत कराया। उन्होंने कहा कि आज समय की मांग है कि हम अपने विद्यार्थियों के लिए न केवल मातृभाषा में पाठ्य सामग्री उपलब्ध करवाएं, बल्कि एक ऐसे अकादमिक वातावरण का निर्माण करें जिसमें हिंदी में तकनीकी विषयों का पठन, पाठन एवं लेखन सहज हो सके। कार्यशाला के विषय-विशेषज्ञ विश्वविद्यालय के संयुक्त कुलसचिव एवं प्रभारी हिंदी अधिकारी संतोष सोहगौरा ने प्रतिभागियों को राजभाषा के नियमों, कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग व तकनीकी शब्दावली निर्माण एवं उसके प्रयोग से परिचित करवाया। प्रश्नोत्तरी में तीन विजेता प्रतिभागियों कु. अदिति उपाध्याय, अमित कुमार शिव एवं गजेंद्र सिंह लोधी को पुरस्कार दिए गए।

उच्च शिक्षा तक सबकी पहुंच सुनिश्चित करना हमारा उद्देश्य

विवि के बीच एमओयू पर हस्ताक्षर करती हुई कुलपति। • नवदुनिया

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर एवं मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय भोपाल के बीच शैक्षणिक समझौते पर मंगलवार को हस्ताक्षर हुए। यह शैक्षणिक समझौता कार्यक्रम समझौता भोज मुक्त विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर में आयोजित किया गया। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, सीइसी-यूजीसी के निदेशक प्रो. जेबी नड्डा एवं मप्र भोज मुक्त विवि भोपाल के कुलपति प्रो. संजय तिवारी की उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि इस एमओयू के माध्यम से दोनों विश्वविद्यालयों के बीच अकादमिक एवं शोध गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुरूप मूल्यपरक शिक्षा, कौशल आधारित शिक्षा के पाठ्यक्रम निर्माण कर उच्च शिक्षा को सर्वसुलभ बनाए जाने के प्रयास को गति मिलेगी और इससे दोनों विश्वविद्यालयों की सहयोगी भूमिका महत्वपूर्ण साबित होगी। उन्होंने कहा कि हमारा उद्देश्य सकल पंजीयन में वृद्धि करना भी है.

• डा. गौर विवि एवं भोज मुक्त विवि भोपाल के बीच हुआ एमओयू

हमारा उद्देश्य है कि समाज का कोई भी वर्ग शिक्षा से वंचित न रहे।

उपयोगी पाठ्यक्रमों का निर्माण करना है हमारा उद्देश्य

प्रो. संजय तिवारी ने कहा कि हमारा उद्देश्य उपयोगी पाठ्यक्रमों का निर्माण करना है। समाज का हर तबका उच्च शिक्षा हासिल कर सके, हमें इस दिशा में कार्य करना है। निश्चित रूप से यह शैक्षणिक समझौता बहुत ही उपयोगी एवं सार्थक सिद्ध होगा। दूरस्थ शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसने शिक्षा तक सबकी पहुंच को आसान बनाया है। इस कार्य में सीईसी का भी सहयोग मिलेगा। कार्यक्रम का संचालन प्रो. रतन सूर्यवंशी ने किया। आभार ज्ञापन भोज मुक्त विवि के कुलसचिव सुशील मंडेरिया ने किया। इस अवसर पर विवि प्रतिनिधि के रूप में भोज मुक्त विवि के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, निदेशक, शोध एवं विकास एवं प्रो. हेरेल थामस, प्रवीण राठौर आदि उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय में ईएमएमआरसी बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट की बैठक हुई

देश के ख्याति प्राप्त संस्थानों से एमओयू से शिक्षा के नए आयाम विकसित होंगे: कुलपति

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में एज्यूकेशनल मल्टी मीडिया रिसर्च सेंटर (ईएमएमआरसी) की बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट की 16वीं बैठक हुई।

इस बैठक की अध्यक्षता कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय की यह कोशिश है कि वह देश के ख्यातिप्राप्त शिक्षा संस्थानों से एमओयू के माध्यम से परस्पर अनुबंध कर शिक्षा के लिए अपने द्वार खोले। इससे निश्चित ही शिक्षा के क्षेत्र में नया दृष्टिकोण समझने एवं देश के शिक्षा संस्थान भी विश्वविद्यालय की समृद्ध शिक्षा एवं शोध से लाभान्वित होंगे। बैठक में नई दिल्ली से विशेष रूप से आए प्रो. जेबी नड्डा, प्रो. केजी सुरेश, ईएमएमआरसी सदस्य निदेशक पी. रघुपति, उस्मानिया विवि प्रभारी कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय एवं वित्ताधिकारी कुलदीपक शर्मा भी बैठक में उपस्थिति रहे। ईएमएमआरसी के निदेशक डॉ. पंकज तिवारी ने बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट की विगत 15वीं बैठक में लिए गए निर्णयों के क्रियान्वयन की जानकारी दी।

विवि में 6 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला शुरू

शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का एकीकृत विकास योग से ही संभव: राजीव चौधरी

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. नवीन शिक्षा नीति में मनुष्य के समग्र एकीकृत विकास के बारे में विस्तृत चर्चा की गई है। शरीर का मन से, मन का बुद्धि से, बुद्धि का आत्मा से और आत्मा का परमात्मा से नाता है। यह नाता योगाभ्यास से और ज्यादा सुदृढ़ सबल और फलीभूत होता है। आज योग के आध्यात्मिक पहलू से ज्यादा शारीरिक और मानसिक पहलू की चर्चा और व्याख्या की जा रही है। यह बात पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर के योग विशेषज्ञ प्रो. राजीव चौधरी ने छह दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में कही।

प्रो. चौधरी ने कहा कि योग त्रिस्तरीय प्रभाव आधारित है। योग को जीवन की प्रत्येक अवस्था में अपनाना चाहिए। विशिष्ट अतिथि सांची विवि के डॉ. उपेंद्र बाबू खत्री ने कहा कि सार्थक जीवन भौतिक सांसारिक भोग का त्याग कर आत्मिक कल्याण का मार्ग अपनाना है। योग अंतर यात्रा सुनिश्चित करता है। कार्यशाला का उद्घाटन करते विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने किया। अतिथियों का स्वागत विभाग के अध्यक्ष प्रो. भवतोष इंद्र गुरु ने किया। कार्यशाला सत्र का संचालन करते हुए डॉ. नितिन कोरपाल ने किया। आभार डॉ. अरूण साव माना। यह कार्यशाला ऑनलाइन व प्रत्यक्ष रूप से प्रतिदिन सुबह 5.30 सुबह से 11 बजे तक चलेगी। जिसमें अब तक 360 प्रतिभागी पंजीयन कर लाभ ले रहे हैं।

अध्ययन बीए आनर्स वैदिक अध्ययन में 40 सीटों के लिए मिलेगा प्रवेश, पीएचडी के लिए दो सीटें रहेंगी

केंद्रीय विवि सागर में अब वेदों की पढ़ाई, पीएचडी भी होगी

शत्रुघ्न केसरवानी • नवदुनिया

सागरः भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवित रखने के उद्देश्य से डा. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में इस साल वैदिक अध्ययन विभाग की स्थापना की गई है। यह देश का पहला केंद्रीय विवि होगा, जहां यह कोर्स शुरू किया जा रहा है, जिसमें 40 सीटों के लिए विद्यार्थी कक्षा 12वीं के बाद सीधे प्रवेश ले सकेंगे। विद्यार्थी बीए आनर्स डिग्री प्राप्त करने के बाद सीधे पीएचडी में प्रवेश ले सकते हैं।

वेद भारत की विशाल ज्ञान राशि के परिचायक हैं। भारतीय गणित, विज्ञान, आयुर्वेद, श्रीमद्भागवद गीता में आत्म प्रबंधन, उपनिषदों में निहित ज्ञान, चरित्र निर्माण एवं

व्यक्तित्व विकास से युक्त भारतीय शिक्षण पद्धति, भारतीय दर्शन की वैज्ञानिकता, वैदिक गणित, महर्षि पतंजलि प्रणीत योग जैसे अनेक विषयों का समावेश इन पाठ्यक्रमों में समुचित रूप से किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों के अनुरूप इस विभाग का उद्देश्य कला, विज्ञान एवं वाणिज्य जैसी विभाजक धाराओं से परे बहु वैषयिक समझ को विकसित करना एवं भारतीय ज्ञान को विज्ञानी रूप से स्थापित करने के लिए वैश्वविक समस्याओं का निदान प्रस्तुत करना है।

वैदिक अध्ययन विभाग वाला देश का पहला केंद्रीय विवि

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने पिछले वर्ष भारतीय ज्ञान परंपरा को जीवित रखने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय में वैदिक अध्ययन विभाग की स्थापना करने की घोषणा की थी। 12वीं की पढ़ाई के बाद विद्यार्थी इसमें डिप्लोमा, सर्टिफिकेट, डिग्री और पीएचडी कर सकते हैं। इस विभाग में बीए आनर्स वैदिक अध्ययन, डिप्लोमा कोर्स,

प्रो. नीलिमा गुप्ता

सर्टिफिकेट कोर्स एवं पीएचडी इन वैदिक अध्ययन कोर्स उपलब्ध हैं। इन विषयों में डिग्री एवं पीएचडी के लिए विद्यार्थियों के लिए प्रवेश परीक्षा पास करना अनिवार्य होगा।

फैकल्टी पहले से नियुक्तः विवि के अधिकारियों के अनुसार विश्वविद्यालय में वैदिक अध्ययन विभाग, भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन के लिए समर्पित विभाग है। बीए आनर्स वैदिक स्टडीज में सीटों की संख्या 40 हैं तो वहीं पीएचडी के लिए दो सीटों में प्रवेश दिया जाना है। यहां प्रवेश के लिए देश के कई राज्यों के विद्यार्थियों ने इच्छा जताई है। और इसका परिणाम आने के बाद बच्चों का अध्ययन कार्य शुरू हो जाएगा। विवि द्वारा वैदिक विभाग में पहले ही दो फैकल्टी नियुक्त किए गए हैं।

“ वैदिक अध्ययन से पढ़ाई करने वाले विद्यार्थी एक तरफ जहां भारत की प्राचीन संस्कृति, ज्ञान की वास्तविकता और अखंडता को समझेंगे, तो वहीं दूसरी तरफ इस कोर्स को करने के बाद वह शिक्षक और प्रोफेसर भी आसानी से बन सकेंगे। ये एसएससी, पीएससी, एमपीपीएससी सहित अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में भाग ले सकेंगे।

– डा. विवेक जायसवाल, मीडिया अधिकारी डा. हरीसिंह गौर केंद्रीय विवि

आयोजन योग, ध्यान, भक्ति तथा नैतिक मूल्यों की भूमिका पर प्रकाश डाला

श्रेष्ठ मनुष्य के निर्माण की नींव है योग

सागर, आचरण संवाददाता।

शिक्षा का उद्देश्य श्रेष्ठ मनुष्य का निर्माण करना है. योग श्रेष्ठ मनुष्य के निर्माण की नींव है. उक्त उद्गार शिक्षा अध्ययन शाला के अधिष्ठाता प्रो. अनिल कुमार जैन ने योग वैकल्पिक एवं पूरक चिकित्सा पद्धति पर 06 दिवसीय कार्यशाला में व्यक्त किए. प्रो. जैन ने आगे कहा कि योग शरीर मन और मस्तिष्क का विज्ञान है और मन मस्तिष्क का उपयोग कर मनुष्य शरीरधारी प्राणियों में श्रेष्ठ हो जाता है. इस शरीर का मन मस्तिष्क से तालमेल बैठने में योग एक सेतु के समान कार्य करता है. प्रो. जैन ने इस प्रतिद्वंद्विता आपाधापी के युग में शांति का मार्ग सुगम कराने में योग की भूमिका रेखांकित करते हुए योग को वर्तमान युग की आवश्यकता बताया. कार्यशाला में नई दिल्ली के आयुर्वेदाचार्य डॉ. दिनेश शर्मा ने आहार का रोगशमन में महत्त्व बताते हुए पंचकर्म विधियाँ पर भी प्रकाश डाला. प्राकृतिक चिकित्सक कानपुर के डॉ. ब्रजेश कश्यप के पंचतत्वों-जल पृथ्वी, वायु, अग्नि और आकाश के माध्यम से रोगों की चिकित्सा पर वृहद विवेचन प्रस्तुत किया.डॉ. नितिन कोरपाल ने सत्र में प्रायोगिक अभ्यास कराते हुए सूक्ष्म व्यायाम का शारीरिक माँसपेशियों, जोडों, विभिन्न संस्थानों पर प्रभाव उपस्थित प्रतिभागियों को समझाया. डॉ. अरूण कुमार साव ने विभागीय गतिविधियों सहित आगामी अंतर्राष्ट्रीय योग पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में सहभागिता की अपील की. डॉ. ब्रजेश सिंह ठाकुर ने केन्द्रीय जेल में चल रहे 10 दिनों योग शिविर में बंदियों को जीवन में सुधार पथ पर अग्रसर होने में योग, ध्यान, भक्ति तथा नैतिक मूल्यों की भूमिका पर प्रकाश डाला. इस अवसर पर कामिनी चौबे ने महिला सशक्तीकरण पर गीत प्रस्तुत किया तथा स्नातक द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने योगाभ्यास की प्रस्तुती दी. बीएमसी से डॉ. संजय जैन, जिला आयुष अधिकारी डॉ. जोगेन्द्र ठाकुर अपने स्टाफ सहित उपस्थित थे।

बुंदेलखंड में चौथी सदी से नदी, नारी और जल का महत्व समझाने गंगा-यमुना की पूजा की परंपरा, गुप्त से लेकर पूर्व मध्य काल तक मंदिरों में बनाई गईं प्रतिमाएं

गंगा दशहरा आज : डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में पहली बार गंगा-यमुना नदी-देवियों पर हुआ शोध

संदीप तिवारी | सागर

सूखे के लिए पहचाने जाने वाले बुंदेलखंड में लोग पानी के महत्व को समझते हुए अब जलसंरक्षण पर जोर दे रहे हैं। परंतु बुंदेलखंड अंचल में नदी, नारी और जल की महत्ता पर जोर 1600 साल पहले से दिया गया है।

इनका महत्व समझाने के लिए नदी देवी गंगा और यमुना की प्रतिमाओं के पूजन की परंपरा रही है। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्व विभाग में पहली बार गंगा-नर्मदा पर केंद्रित शोध में यह तथ्य सामने आए हैं।

5 साल तक चले शोध में पाया गया है कि बुंदेलखंड के प्राचीन मूर्ति शिल्प में नदी देवी गंगा एवं यमुना का अंकन गुप्त काल से लेकर कल्चुरी, चंदेल तथा परमार काल यानी पूर्व मध्यकाल तक किया गया, जो बुंदेलखंड में गंगा-यमुना की महत्ता एवं पवित्रता को प्रतिष्ठित करता है।

नोहलेश्वर शिव मंदिर नोहटा (दमोह)

तत्कालीन समाज में मूर्ति शिल्प का विकास

शोधार्थी डॉ. अशोक कुमार यादव बताते हैं कि बुंदेलखंड के तत्कालीन समाज में मूर्तिशिल्प का विकास, नदियों का महत्व, समाज में महिलाओं की स्थिति तथा विभिन्न मांगलिक प्रतीकों के महत्व की स्वाभाविक अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। तत्कालीन कलाविदों ने अपनी विषय वस्तु को केवल धार्मिक स्रोतों से ही उन्हें चुना हो ऐसी बात नहीं है।

चंदेल शासकों ने मंदिर-मूर्तियां बनवाईं

शोध प्रबंध के निर्देशक प्रो. नागेश दुबे बताते हैं बुंदेलखंड प्राचीन काल से ही मानव गतिविधियों का केंद्र रहा है। यहां शासन करने वाले गुप्त, प्रतिहार, कल्चुरी एवं चंदेल शासकों ने योग्य शिल्पियों एवं स्थापतियों से बड़ी संख्या में मंदिरों एवं मूर्तियों का निर्माण कराया। उनमें से अनेक मंदिर अपने समय काल के प्रभाव से नष्ट हो गए, जिनके अवशेष संभाग के विभिन्न संग्रहालयों में हैं।

मंदिरों के गर्भगृह पर करते थे स्थापित

प्रो. दुबे के मुताबिक विभिन्न मंदिरों की द्वार शाखाओं में गंगा और यमुना की प्रतिमाएं स्थापित हैं। भग्न यानी विध्वंस हो चुके मंदिरों की गंगा-यमुना की प्रतिमाओं के द्वार स्तंभ बुंदेलखंड के संग्रहालयों में भी प्रदर्शित हैं। जिनसे यह प्रमाणित होता है कि प्राचीन काल में नदी देवियों को पवित्रता का प्रतीक मानकर गर्भगृह के द्वार पर स्थापित किया जाता था।

डा. गौर विवि में रिमोट सेंसिंग एवं जीआइएस पर कौशल कार्यक्रम शुरू

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागर : डा. हरीसिंह गौर विवि के सामान्य एवं व्यावहारिक भूगोल विभाग द्वारा रिमोट सेंसिंग एवं जीआइएस पर दो सप्ताह का समर कौशल कार्यक्रम रविवार से शुरू हो गया।

कार्यक्रम का उद्घाटन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने करते हुए बताया कि कई वर्षों से इस बात की कमी महसूस की जा रही थी कि यह ख्यातिनाम विवि किस प्राकर से अपने परिसर से बाहर निकल कर आमजन के लिए भी उनके ज्ञान संवर्द्धन एवं रोजगारपरक क्षमता विकास में सहयोग कर सकता है। इसलिए कुछ छोटी अवधि के कौशल विकास कोर्स आरंभ करने की आवश्यकता महसूस हुई और हमने इसी सत्र से इसे शुरू किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान में हम सभी की लोकेशन किसी से अंजान नहीं है। हमारे मूवमेंट्स का पता करना अब बड़ी बात नहीं रह गई है। आज घर बैठे हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति होना, आर्टिफिसियल इंटेलीजेंस के माध्यम से अपनी कल्पनाओं को साकार कर लेना सूचना प्रौद्योगिकी का ही कमाल है। मौसम, वायुयान संचालन में रिमोर्ट सेंसिंग का उपयोग : प्रो. गुप्ता ने कहा कि आज के समय में सटीक मौसम अनुमान, वायुयान संचालन, राष्ट्रीय सुरक्षा, वून प्रबंधन, कृषि एवं अन्य प्राकृतिक संसाधनों एवं आपदाओं की मैपिंग के लिये रिमोट सेंसिंग प्रणाली का उपयोग हो रहा है। विवि में नवाचार एंव समर स्किल प्रोग्राम के अध्यक्ष व इस रिमोट सेंसिंग प्रशिक्षण कार्यक्रम के संयोजक प्रो. विनोद कुमार भारद्वाज ने बताया कि इस कार्यक्रम में देश के 13 राज्यों व 1 केंद्र शासित प्रदेश से कुल 80 प्रशिक्षणार्थी रजिस्टर्ड हुए है। इसमें सबसे ज्यादा 39 प्रषिक्षणार्थी मध्यप्रदेश से रजिस्टर्ड हैं व राजस्थान से 34 प्रशिक्षणार्थी हैं। इसमें पूर्वोत्तर राज्यों नागालैण्ड, मिजोरम, आसाम, मेघालय व दक्षिणी राज्यों तमिलनाडू व केरल से भी प्रशिक्षणार्थी जुड़े हुए हैं।

28 जून तक चलेगा प्रशिक्षण

यह प्रशिक्षण पूर्णतः आनलाइन मोड पर आयोजित करवाया जा रहा है जो 28 जून तक चलेगा। कार्यक्रम में अजमेर राजस्थान के सोफिया कालेज की प्रोफेसर मोनिका कन्नन ने रिमोट सेंसिंग जीआईएस की उपयोगिता के बारे में व गोवा के चोगुले कॉलेज के प्रोफेसर नंदकुमार सावंत ने भारत में रिमोट सेंसिंग जीआईएस तकनीकि विकास के बारे में सत्र आयोजित किए। कार्यक्रम में भूगोल विभाग के डा. सथीष सी ने सभी का स्वागत किया व डा. आरबी अनुरागी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सत्र संचालन शोधार्थी राहुल मिश्रा ने किया।

पीजी की खाली सीटों के लिए काउंसिलिंग 19 को

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर कोर्स में प्रवेश के लिए तीसरी काउंसिलिंग 19 जून को होगी। विद्यार्थियों का रिपोर्टिंग समय सुबह 10 बजे होगा। विश्वविद्यालय की एडमिशन सेल द्वारा बताया गया है कि समर्थ पोर्टल पर पंजीकृत जो आवेदक पहली काउंसिलिंग में भाग लेने के बाद भी प्रवेश नहीं ले सके वे इसमें हिस्सा ले सकते हैं।

ऋचा त्रिपाठी को फार्मेसी में पीएचडी अवार्ड घोषित

सागर। ब्राह्मण समाज की गौरव सागर निवासी ऋ चा त्रिपाठी तिवारी आत्मजा पंडित एम डी त्रिपाठी पूर्व शिक्षा अधिकारी को डॉक्टर हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर की फ ार्मास्यूटिकल साइंस एंड टेक्नोलॉजी विभाग ने उनके शोध विषय डेवलपमेंट एंड कैरक्टराइजेशन ऑफ साइड कॉर्डिफोलिया फाइटोम फॉर न्यूरोडीजनरेटिव डिसीस पर डाक्टर ऑफफिलॉसोफी अवार्ड घोषित की। ऋचा ने अपना शोध कार्य प्रोफेसर अस्मिता गजभि, भेसजिक विज्ञान विभाग के मार्गदर्शन में किया है।

छह दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का समापन

अध्ययन काल में लक्ष्य तय करो और तब तक मत रुको, जब तक उसे हासिल न कर लो : रविकेशवन

सागर@पत्रिका. विद्यार्थियों को अध्ययन काल में लक्ष्य तय करना चाहिए और तब तक नहीं रुकना चाहिए, जब तक कि उसे हासिल न कर लें। रुकावटें, बाधाएं जीवन में समय की परीक्षा के तौर पर आती हैं, लेकिन साहसी, आत्म बलवादी विद्यार्थी ही विजयश्री प्राप्त करते हैं। यह बात 12 मराठा लाइट इंफेंट्री यूनिट के कमांड अधिकारी कर्नल ए रविकेशवन ने शिक्षा विभाग डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित छह दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन सत्र में कही।

उन्होंने कहा धैर्य, अनुशासन और ज्ञान साधना के बल पर व्यक्ति असाधारण उपलब्धियां प्राप्त कर सकता है और ये सभी गुण योग शिक्षा से प्राप्त होते हैं। योग आध्यात्मिक साधना की विद्या है जो हमें जीवन में अनुशासन सिखाती है, आत्मबल विकसित करती है

और हार नहीं मानने की प्रवृत्ति जागृत करती है। योग जीवन का संयोजन और जीवन में समायोजन की विद्या है, जिसके माध्यम से हम भौतिक स्थूल स्तर से सूक्ष्म जगत में प्रवेश कर मुक्ति को पाते हैं। सत्र के प्रारंभ में स्नातक छात्रा विधि चौबे ने कत्थक शैली में प्रभु वंदना प्रस्तुत की। स्नातकोत्तर छात्रा मानसी मिश्रा ने नृत्य के माध्यम से योगेश्वर कृष्ण की स्तुति की। रिमझिम दुबे ने योगाभ्यास प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम में हरिद्वार से आए विशेषज्ञ डॉ. कामता प्रसाद साहू ने कहा कि योग चित्त का विज्ञान है, जो अभ्यास और साधना के माध्यम से मन और चित्त पर

विजय प्राप्त कराता है। गाजियाबाद के डॉ. सचिन पवार ने एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर, कपिंग थेरेपी, चुंबक चिकित्सा, योग चिकित्सा पर कार्यशाला संचालित करते हुए विद्यार्थियों को इन चिकित्सा पद्धतियों के सिद्धांतों व प्रयोगों को समझाया। डॉ. पवार ने इन पद्धतियों का रोगों में कैसे उपयोग करना है इसका विद्यार्थियों पर ही प्रयोग कर प्रशिक्षण दिया। योग विभागाध्यक्ष प्रो. भवतोष इंद्र गुरू ने कहा कि हमें सफलताओं की प्राप्ति के लिए जीवन को योगमय बनाना होगा। मनुष्य जीवन असाधारण से असाधारण की यात्रा है। कार्यशाला का संचालन कर रहे डॉ. नितिन कोरपाल ने बताया कि छह दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में ऑनलाइन और प्रत्यक्ष रूप से 350 से ज्यादा प्रतिभागियों ने शामिल होकर योग वैकल्पिक एवं पूरक चिकित्सा पद्धतियों की अवधारणा और तकनीक को समझा और जाना है।

कल से दो दिन प्रतियोगिताएं

डॉ. अरुण साव ने बताया कि यह आयोजन 10वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के संदर्भ में किए जा रहे हैं। इसके बाद 19 व 20 जून को योगासन, रंगोली, पोस्टर, भाषण, कविता और निबंध प्रतियोगिताएं योग विभाग में आयोजित होंगीं। योग दिवस पर 21 जून को सुबह 5.30 बजे से महर्षि पतंजलि भवन में मुख्य आयोजन होगा। इस कार्यशाला के साथ डॉ. ब्रजेश ठाकुर केंद्रीय जेल में 10 दिवसीय योग शिविर भी राहुल साहू तथा लंबोदर पटेल के साथ संचालित कर रहे हैं।

सागर विवि में 26 साल बाद यूजीसी नेट आज, 3 केंद्र बनाए

भास्कर संवाददाता | सागर

यूजीसी नेट की पात्रता परीक्षा मंगलवार को सागर शहर में 3 परीक्षा केंद्रों पर होगी। विभिन्न विषयों के लिए 2949 विद्यार्थी परीक्षा में शामिल होंगे। एनटीए की सिटी कोआर्डिनेटर डॉ. मंजू कोहली ने बताया कि शहर में दून वर्ल्ड पब्लिक स्कूल, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय एवं डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के आचार्य शंकर भवन को परीक्षा केंद्र बनाया गया है। दो पारियों में परीक्षा होगी। पहली पारी सुबह 9.30 से 12.30 बजे तक है। जबकि दूसरी पारी दोपहर 3 से शाम 6 बजे तक होगी। परीक्षार्थियों को प्रवेश पत्र, मूल शासकीय परिचय पत्र एवं दो पासपोर्ट फोटो के साथ परीक्षा केंद्र पर पहुंचना है। सुरक्षा व्यवस्था के लिए संबंधित पुलिस थानों में भी सूचना दे दी गई है। गौरतलब है कि सागर विश्वविद्यालय में वर्ष 1998 तक यूजीसी नेट परीक्षा का केंद्र रहा है।

'वागीश्वरी' पुरस्कार से डॉ. सुजाता मिश्र पुरस्कृत

सागर | मप्र हिंदी साहित्य सम्मेलन की 65वीं वर्षगांठ पर आयोजित "नीलम जयंती शब्द उत्सव" भोपाल में आयोजित किया गया। सम्मेलन के अंतिम दिन आयोजित अलंकरण एवं पुरस्कार समारोह में डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के हिंदी विभाग में अतिथि विद्वान के रूप में कार्यरत डॉ.सुजाता मिश्र को उनकी पुस्तक 'हिंदी सिनेमा की स्त्री यात्रा' (कथेतर गद्य विधा) के लिए वर्ष 2023 का वागीश्वरी पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कृत पुस्तक 'हिंदी सिनेमा की स्त्री यात्रा' का विमोचन गौर जयंती के अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, तत्कालीन कुलाधिपति प्रो.

बलवंत जानी तथा यूजीसी के पूर्व चेयरमैन प्रो. डीपी सिंह ने किया था। संस्था श्यामलम् द्वारा गत वर्ष पुस्तक पर चर्चा और विमर्श का आयोजन भी किया गया था।

पीजी की खाली 812 सीटों के लिए तीसरी काउंसलिंग आज

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर के विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए खाली बची सीटों पर बुधवार को तीसरी काउंसलिंग होगी।

विश्वविद्यालय द्वारा जारी सूचना के अनुसार काउंसलिंग सुबह 11 बजे से शुरू होगी, लेकिन आवेदकों को रिपोर्टिंग टाइम एक घंटे पहले यानी सुबह 10 का तय किया है। स्नातकोत्तर के 51 विषयों के लिए होने वाली इस काउंसलिंग में बी-लिब, एलएलबी तीन साल और पत्रकारिता में स्नातक विषय शामिल हैं। विश्वविद्यालय के अनुसार दो काउंसलिंग होने के बाद स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रमों में वर्तमान में करीब 812 सीटें खाली हैं। प्रवेश प्रकोष्ठ द्वारा जारी नोटिफिकेशन के अनुसार इस काउंसलिंग में वे आवेदक भी शामिल हो सकते हैं, जो पूर्व की काउंसलिंग में फीस पेमेंट ऑन होल्ड के कारण प्रवेश नहीं पा सके हैं।

शोधकर्ता डॉ. मिनी भारती अहिरवार का जापान में पोस्ट डॉक्टोरल फ़ैलोशिप के लिए चयन

सागर, आचरण। रसायनशास्त्र विभाग की पूर्व-शोधार्थी डॉ. मिनी भारती अहिरवार, पलेरा, टीकमगढ़ (म.प्र.) निवासी पिता, रामभरोसे अहिरवार, माता, सुमित्रा अहिरवार, का क्योटो विश्वविद्यालय, क्योटो, जापान में पोस्टडॉक्टोरल अध्ययन के लिए चयन हुआ है। हाल ही में डॉ. मिनी ने रसायन विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर, (म.प्र.) से पीएचडी की डिग्री, पर्यवेक्षक डॉ. मिलिंद एम. देशमुख (सहायक प्राध्यापक) के मार्गदर्शन में प्राप्त की।

डॉ. मिनी भारती ने इस विश्वविद्यालय से 2017 में स्नातक, 2019 में स्नातकोत्तर, और 2023 में पीएचडी डिग्री प्राप्त की। इन्होंने अपने शोध कार्य को अंतरराष्ट्रीय जर्नल्स जैसे कि 5 अमेरिकन केमिकल सोसायटी, 5 रॉयल सोसायटी ऑफ केमिस्ट्री, 5 वाइली, और 1 जर्नल ऑफ केमिकल साइंसेज, (कुल 16) में प्रकाशित किया। डॉ. मिनी 27 जून, 2024 को जापान के लिए रवाना होंगी। उनके पोस्टडॉक्टरल अध्ययन के लिए विभागाध्यक्ष, पर्यवेक्षक, शिक्षकगण, परिजन, सहपाठियों एवं मित्रों ने बधाइयाँ और शुभकामनाएँ दीं।

विवि : 8 दिवसीय बुंदेलखंड भ्रमणशील कार्यशाला हुई, लोककला, संस्कृति से रूबरू हुए विद्यार्थी

दो संस्थाओं के विद्यार्थियों के संगम से एक दूसरे को सीखने का अवसर मिला : कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक परिषद एवं मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में 8 दिवसीय बुंदेलखंड भ्रमणशील कार्यशाला विवि में हुई। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा दोनों संस्थाओं के विद्यार्थियों के संगम से एक दूसरे को सीखने का अवसर मिला है। इससे दोनों संस्थाएं एवं विद्यार्थी लाभान्वित हुए। भविष्य में भी ऐसी साझेदारी अन्य सांस्कृतिक संस्थाओं से की जाएगी। स्थानीय समन्वयक डॉ राकेश सोनी रहे।

आयोजन के पहले चरण में नाट्य विद्यालय के छात्रों को क्षेत्रीय संस्था श्रीकृष्ण सांस्कृतिक विकास संस्थान समिति द्वारा बुंदेली लोक नृत्यों का प्रशिक्षण दिया गया। जिसमें बुंदेलखंड के लोक नृत्य में प्रमुख रूप से बधाई नृत्य, नौरता नृत्य, बरेदी नृत्य, जावरा नृत्य का प्रशिक्षण दिया गया। दूसरे चरण में

विश्वविद्यालय में बुंदेली सांस्कृतिक प्रस्तुतियों पर केंद्रित कार्यशाला हुई।

बुंदेलखंड की लोक संस्कृति पर विद्वानों द्वारा व्याख्यान दिया गया। बुंदेली लोक सांस्कृतिक धरोहर इसके संरक्षण व संवर्धन में रंगमंच की भूमिका विषय पर डॉ. पंकज तिवारी, बुंदेली लोकगीत पारंपरिक गीतों एवं सोलह संस्कारों से संबंधित गीतों का लोक जीवन से अंतर्संबंध, उनका महत्व एवं गायकी विषय पर शिवरतन यादव, बुंदेली लोक संगीत में प्रयुक्त होने वाले लोक वाद्य यंत्र उनका इतिहास और महत्व विषय पर डॉ. ललित मोहन, बुंदेली लोक नाट्य-स्वांग, लोक नाट्य स्वांग का इतिहास, शैली एवं वर्तमान स्वरूप एवं सैद्धांतिक व व्यवहारिक पक्ष विषय पर डॉ. संतोष साहू, बुंदेली लोक गाथा जानकारी एवं प्रदर्शन पर व्याख्यान ओम प्रकाश चौबे, बुंदेली लोक साहित्य पर डॉ. राजेंद्र यादव, बुंदेलखंड और रंगमंच विषय पर डॉ. राकेश सोनी, कहानी लेखन एवं उसके महत्व विषय पर डॉ. आशुतोष मिश्रा, बुंदेलखंड के नाट्य और लोक नाट्य विषय पर राजेंद्र दुबे ने व्याख्यान दिया। इससे विद्यार्थियों को बुंदेलखंड की लोक संस्कृति और लोक जीवन को समझने का मौका मिला। तीसरे चरण में प्रोडक्शन क्लास संजय श्रीवास्तव द्वारा की गई जो अगले महीने नाट्य विद्यालय द्वारा होने वाले नाटक की तैयारी का हिस्सा है। नाटक का निर्देशन संजय श्रीवास्तव द्वारा किया जा रहा है। चौथे चरण में लोक कलाओं का अवलोकन छात्रों द्वारा किया गया। स्वांग संतोष पांडेय एवं दल द्वारा, बधाई जुगल नामदेव एवं दल, नौरता धुवा नामदेव एवं दल द्वारा प्रस्तुत किया गया। भ्रमण करवाने के लिए शुभम पांडेय एवं दल, ढिमरयाई लीलाधर रायकवार एवं दल, बरेदी श्रीकृष्ण लोक सांस्कृतिक विकास संस्थान समिति, लोकगीत कावेरी प्रजापति एवं दल द्वारा प्रस्तुत किया गया। राई नृत्य के बारे में जानकारी के लिए विद्यार्थी रामसहाय पांडेय एवं उनके दल से मिलने कनेरादेव भी गए।

चैतन्य चेतना का साधक ही योगी : डॉ. त्रिपाठी

जागरण सागर। भारत भूमि पर भारत माता की संतान के रूप में जीवन पाना गौरव की बात है। इस गौरवशाली परंपरा में एक व्यक्ति को चैतन्य चेतन बना रहना आवश्यक है। जैसे बुझी हुई राख में जीवन नही होताए जो पशुवत जीवन जी रहे है उसका कोई सार नही ह। चैतन्य चेतना का साधक ही योगी होता है और चैतन्य चेतना की अनुभूति ही योग है। उक्त उद्गार महर्षि महेश योगी वैदिक विश्वविद्यालय भोपाल के योगाचार्य डॉ निलिम्प त्रिपाठी ने योग शिक्षा विभाग डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम में व्यक्त किए। आचार्य त्रिपाठी ने कहा कि आहार निद्रा भय और मैथुन यदि मनुष्य की प्रवृत्ति है तो सहज आत्मीयता प्रेम करूणा मनुष्य जीवन का स्वभाव। इस स्वभाव का आचरण व्यवहार में उतारकर मनुष्य चैतन्य चेतना को प्राप्त कर सकता है। इसके लिए मनुष्य को योग को अपनाना होगा क्योंकि योग चेतन का विज्ञान है और चित्त पर विजय प्राप्त करने की साधना पद्धति है। इस अवसर पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय ने भारत सरकार की मंशा के अनुरूप तीन माह का काऊंटडाऊन मानते हुए समाज को योग से जोड़ने का कार्य किया। इस योग दिवस की थीम स्वयं तथा समाज के लिए योग को सार्थक करते हुए योग विभाग के माध्यम से शहर में योग केम्प लगाये गये। योग शरीर मन बुद्धि और आत्मा का विज्ञान है।

बुंदेली में तैयार गुड़िया की शादी का मंचन होगा

मप्र नाट्य विद्यालय के निदेशक जोशी ने बताया, बुंदेलखंड भ्रमण कार्यशाला आयोजित

नवभारत न्यूज

सागर 23 जून. मप्र नाट्य विद्यालय, राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर से संबंद्ध एवं संस्कृति परिषद डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के तत्वावधान में बुंदेलखंड भ्रमणशील कार्यशाला का आयोजन किया गया.

मप्र नाट्य विद्यालय के निदेशक टीकम जोशी ने बताया कि उपरोक्त कार्यशाला में जो विद्यार्थियों को सिखाया गया है उसका प्रयोग बुंदेली बोली में तैयार की जा रही नवीन नाट्य प्रस्तुति गुड़िया की शादी में किया जाएगा. नाटक का प्रदर्शन 4 एवं 5 जुलाई को रविन्द्र भवन सभागार भोपाल में किया जाएगा. बुन्देलखंड भ्रमणशील कार्यशाला जिसमें नाट्य विद्यालय के छात्रों

को यहां की क्षेत्रीय संस्था कृष्ण संस्कृतिक विकास संस्थान समिति द्वारा बुंदेली लोक नृत्यों का प्रशिक्षण दिया गया. जिसमें बुंदेलखंड के लोक नृत्य में प्रमुख

जुलाई के प्रथम सप्ताह में भोपाल में नाटक का मचंन

रूप से बधाई नृत्य, नौरता नृत्य, बरेदी नृत्य, जावरा नृत्य का प्रशिक्षण छात्रों ने प्राप्त किया. बुन्देलखंड की लोक संस्कृति पर विद्वानों द्वारा व्याख्यान का आयोजन किया गया. जिसमें विभिन्न विषयों पर विभिन्न विद्वानों ने छात्रों के समक्ष अपना व्यख्यान दिया. बुन्देलखण्ड कार्यशाला के उपरांत मध्यप्रदेश नाट्य विद्यालय के वर्तमान सत्र 2023-25 के विद्यार्थियों के साथ आमंत्रित अतिथि व्याख्याता संजय श्रीवास्तव के निर्देशन में नवीन नाट्य प्रस्तुति गुड़िया की शादी तैयार करवाई जा रही है.

भौगोलिक और सूचना तकनीकी ज्ञान प्रादेशिक विकास को नई दिशा दे सकते हैं : प्रो. कन्नन

विश्वविद्यालय : भूगोल विभाग में भूगोल दर्शन एवं शोध ज्ञान पर व्याख्यानमाला आयोजित

जागरण सागर। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के भूगोल विभाग में भूगोल दर्शन एवं शोध ज्ञान विषय पर व्याख्यानमाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. जेएल. जैन, पूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल विभाग उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता प्रो. मोनिका कन्नन सोफिया कालेज अजमेर, राजस्थान जबकि अध्यक्षता भूगोल विभाग विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद के. भारद्वाज की उपस्थिति में कार्यक्रम की विधिवत शुरूआत की गई। शोध ज्ञान में आमंत्रित विभाग के दो शोध छात्रों ने अपना शोध संबंधी अनुभव साझा किया। जिनमें राजनंदिनी गुप्ता ने अर्थ एक्सप्रोलर यूएसजीएस के माध्यम से सैटेलाइट इमेजेंज को कैसे डाउनलोड किया जाता है तथा हैण्ड ऑन प्रैक्टिस के माध्यम से प्रस्तुतीकरण किया वही विभाग की दूसरी शोध छात्रा पूनम बुखारा ने साहित्य अवलोकन की क्रियाविधि को ग्राफके माध्यम से प्रस्तुत किया तथा साहित्य अवलोकन की बारीकियों को साझा किया। भूगोल दर्शन के अंतर्गत विभाग के शिक्षक डॉ. आरबी अनुरागी ने पर्यटन की संकल्पना एवं सांस्कृतिक भूदृश्य मध्यप्रदेश के बुन्देलखंड क्षेत्र के विशेष संदर्भ में अपना वक्तव्य दिया। डॉ. अनुरागी ने बुन्देलखंड में अवस्थित सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों का चित्र के माध्यम से एक-एक का प्रस्तुतीकरण किया तथा उनकी विशेषताओं कम विकसित होने के कारणों एवं इन पर्यटन स्थलों को भविष्य में विकसित करने की संभावनाओं पर प्रकाश डाला।

मुख्य वक्ता प्रो. मोनिका कन्नन ने भौगोलिक सूचना प्रणाली के माध्यम से अजमेर सिटी में होने वाले अपराध पर अपना वक्तव्य दिया उन्होंने विभिन्न मानचित्रों एवं रेखाग्राफ के माध्यम से अजमेर सिटी में अपराध के केन्द्र बिंदुओं की पहचान को रेखांकित किया। उन्होंने रिमोट सेंसिंग जीआईएस विधि से अपराध क्षेत्रों की पहचान, नियंत्रण और पुलिस तंत्र की सहायता के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि उनकी टीम ने महिलाओं की सुरक्षा एवं सहायता के लिए एक एप्प भी बनाया है, जो कि वहां उपयोग में भी लाया जा रहा है। प्रो. कन्नन ने इस बात को दोहराया कि भौगोलिक ज्ञान और सूचना तकनीकी मिलकर स्थानीय व प्रादेशिक विकास को नई दिशा दे सकते हैं। मुख्य अतिथि प्रो. जेएल. जैन ने विभागाध्यक्ष संचालित कार्यक्रमों को विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए उपयोगी एवं सार्थक बताया। अध्यक्षता कर रहे विभागाध्यक्ष प्रो. विनोद के. भारद्वाज ने वक्ताओं द्वारा दिये गये प्रस्तुतीकरण पर प्रकाश डाला और बड़ी संख्या में उपस्थित शोध छात्रों, पीजी. विद्यार्थियों के लिए इस तरह के कार्यक्रमों को विभाग में संचालित करने के लिए प्रतिबद्धता दोहराई।

समस्त विभागों के पाठ्यक्रमों को द्विभाषी में जारी किया जाएगा

बैठक के दौरान कई विषयों पर चर्चा कर निर्णय लिए गए। • नवदुनिया

नवदुनिया प्रतिनिधि, सागरः डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की प्रगति की समीक्षा एवं राजभाषा उन्नयन के लिए आवश्यक निर्णय लेने के लिए भाषा अध्ययनशाला की अधिष्ठाता प्रो. चंदा बैन की अध्यक्षता में विश्वविद्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक आयोजित की गई। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय का शैक्षिक पाठ्यक्रम द्विभाषी होना चाहिए। विश्वविद्यालयीन राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य-सचिव एवं प्रभारी हिंदी अधिकारी ज्वाइंट रजिस्ट्रार संतोष सोहगौरा ने बैठक की कार्यसूची प्रस्तुत की। उन्होंने समिति को राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित की गई। उन्होंने मंत्रालय द्वारा राजभाषा के प्रगामी प्रयोग एवं प्रचार प्रसार को लेकर जारी निर्देशों के बारे में सदस्यों को अवगत कराया।

समिति ने यह निर्णय लिए : समिति के सदस्यों के सुझाव पर सर्वसम्मित से विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा संस्थान के माध्यम से प्रयोजनमूलक हिंदी में प्रमाण-पत्र कार्यक्रम संचालित करना, हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कराने के लिए प्रयास करना, विश्वविद्यालय की गतिविधियों पर आधारित मासिक समाचार-पत्र जारी करना। समस्त विभागों के पाठ्यक्रमों को द्विभाषी में जारी किया जाएगा, हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हिंदी दिवस के अतिरिक्त वर्ष में कम-से-कम दो राजभाषा गतिविधि आयोजित करना, सामाजिक विज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र के सहयोग से प्रतिमाह व्याख्यान आयोजित कराना व वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के सहयोग से कार्यशाला का आयोजन करने आदि जैसे निर्णय लिए। बैठक में प्रो. वर्षा शर्मा, प्रो. आनंद प्रकाश मिश्रा, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अनिल कुमार जैन, प्रो. राजेन्द्र यादव, प्रो. नेत्रपाल सिंह, डा. आर.टी बेंद्रे, डा. मोहन टीए, कुलदीपक शर्मा, डा. संजय शर्मा, डा. विवेक जायसवाल मौजूद थे।

विवि • नए शिक्षा सत्र की शुरुआत तक अन्य जरूरी व्यवस्थाएं भी जुटाने का दावा

पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग नए भवन में शिफ्ट, अब अत्याधुनिक सुविधाओं में विद्यार्थी करेंगे अध्ययन

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान भवन नवनिर्मित कौटिल्य भवन में स्थानांतरित हो गया है। अब विभाग यहीं से संचालित होगा और विद्यार्थी अत्याधुनिक सुविधाओं युक्त भवन में पढ़ाई करेंगे। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि विभाग की लंबे समय से मांग थी कि उन्हें अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त भवन उपलब्ध कराया जाए। विश्वविद्यालय की प्राथमिकता है कि यहां पढ़ने वाले विद्यार्थियों को सर्वश्रेष्ठ इंफ्रास्ट्रक्चर एवं सुविधाएं मिलें। भारत सरकार से प्राप्त अनुदान के जरिए भवन का निर्माण कराया गया जो उपयोग के लिए तैयार है। विभाग एवं विद्यार्थियों की जरूरतों के अनुसार सभी सुविधाएं इसमें उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों एवं विभाग के लिए अन्य जरूरी सहायक सामग्री एवं सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयास भी किए जा रहे हैं। विभागाध्यक्ष प्रो. डीके नेमा ने बताया कि पूर्व की तुलना में विभाग ज्यादा व्यवस्थित और अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ संचालित होगा। नए सत्र की शुरुआत तक अन्य जरूरी व्यवस्थाएं भी सुनिश्चित कर ली जाएंगी। विभागीय प्रयोगशाला एवं लाइब्रेरी के सुचारू संचालन की व्यवस्था की जा रही है। नए भवन में स्मार्ट क्लासरूम, शोधार्थी कक्ष सहित प्रत्येक अकादमिक गतिविधि के संचालन के लिए पर्याप्त कक्ष उपलब्ध हैं।